शिव अमंत्रण

RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण | वर्ष-13, अंक-01, हिन्दी (मासिक), जनवरी 2026, पृष्ठ 16, मूल्य- 12:50

नव वर्ष 2026

26 JANUARY गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

परमपिता परमात्मा शिव दे रहे 'दिव्य ज्ञान'

ब्रह्माकुमारीज़ में रखी जा रही स्वर्णिम दुनिया की नींव

सनातन संस्कृति का जयघोष

ब्रह्माकुमारीज में स्वर्णिम दुनिया की नींव रखी जा रही है और इसका जयघोष आज से 89 वर्ष पूर्व हो चुका है। इस वर्ष 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती मनाई जा रही है। सृष्टि के रचनाकर, स्वयं परमपिता शिव परमात्मा इस महापरिवर्तन की गाथा लिख रहे हैं। परमात्मा के दिव्य मार्गदर्शन और निर्देशन में परिवर्तन की यह मुहिम जारी है। परमात्म ज्ञान, पालना, शिक्षा और राजयोग मेडिटेशन का कमाल है कि आज 25 लाख से अधिक लोग इस दिव्य कार्य से जुड़कर अपना जीवन सफल कर रहे हैं। इन्होंने न केवल परमात्मा की सूक्ष्म उपस्थिति को महसूस किया है वरन इस महान कार्य के साक्षी भी हैं। इनका तपस्वी जीवन समाज के लिए प्रेरणा है। महापरिवर्तन और कल्प की पुनरावृत्ति के संधिकाल को स्पष्ट करती **शिव आमंत्रण की विशेष रिपोर्ट....**

राजयोग की शिक्षा देकर परमात्मा रच रहे हैं नया संसार

ऐसे रखी जा रही है नवयुग की आधारशिला...

नवसृजन का कार्य एक प्रक्रिया के तहत ईश्वरीय संविधान के अनुसार होता है। जैसे एक विद्यार्थी विद्या अध्ययन की शुरुआत पहली कक्षा से करता है और फिर वह साल दर साल आगे बढ़ते हुए एक दिन विशेष योग्यता प्राप्त कर न्यायाधीश, आईएएस, सीए, पायलट, शिक्षक, वैज्ञानिक और पत्रकार बनता है। इसी तरह निराकार परमात्मा ईश्वरीय संविधान के तहत शिक्षा देकर स्वर्णिम दुनिया, नवयुग के स्थापना की आधारशिला रखते हैं। स्वयं परमात्मा ही नर से श्रीनारायण और नारी से श्रीलक्ष्मी बनने के लिए राजयोग ध्यान सिखाते हैं। राजयोग को चार मुख्य विषय (ज्ञान, योग, सेवा और धारणा) में बांटा गया है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आज लाखों लोग अपना दाखिला कराकर पढ़ाई को पूरी लगन, मेहनत, त्याग और तपस्या के साथ पढ़ रहे हैं। इसके परिणामस्वरुप मानव के व्यक्तित्व में दिव्यगुण, विशेषताएं और दिव्य शक्तियां स्वाभाविक रुप से झलकने लगती हैं। चार विषयों में प्रवीण होने के बाद आत्मा अपनी संपूर्णता की स्थिति को प्राप्त कर उड़ जाती है।

शिव बाबा की दिव्य अनुभूति मैंने की है

परमपिता शिव परमात्मा की दिव्य अनुभूति मैंने अपने जीवन में खुद महसूस की है। मुझे उनका हर पल साथ महसूस होता है। मैं आज भी अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से एक घंटा परमात्मा शिव बाबा का ध्यान लगाती हूं। परमात्मा के ध्यान से ही आत्मा में दिव्य गुण और शक्तियां आती हैं। हमारा आत्मबल बढ़ता है। क्योंकि परमात्मा ही सभी मनुष्यात्माओं के परमपिता हैं। सत् चित आनंद स्वरूप हैं। लेकिन आज हम अपने स्वरूप को भूल गए हैं। ब्रह्माकुमारी बहनें सिखाती हैं कि कैसे हम शांति, सुख और आनंद से रहें। हमारे अंदर जो अमृत है उसका मंथन करना है और मंथन करके हमारे अंदर जो विष है उसे फेंककर अमृत को धारण करना है। जब सभी अमृत को धारण करेंगे तो जल्द ही इस दुनिया में स्वर्णिम युग आएगा।

– द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति, भारत

अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता

ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारी परिवार का अभिनंदन करता हूं। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता है। इसलिए अमृत काल का यह समय हमारे ज्ञान, योग और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परंपराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। जिसका विस्तार आधुनिकता के आधार पर अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ होगा। इन प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

श्रीमद्भ भगवत गीता से लेकर महाभारत, शिवपुराण,रामायण, यजुर्वेद, मनुस्मृति सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। किसी भी धर्म ग्रंथ में परमात्मा के जन्म लेने की बात नहीं है। हर जगह प्रकट होने, अवतरण पर परकाया प्रवेश की बात को ही इंगित किया गया है। क्योंकि परमात्मा का अपना कोई शरीर नहीं होता है। वह परकाया प्रवेश कर नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना का दिव्य कार्य कराते हैं। यहां तक कि शिवपुराण में स्पष्ट लिखा है कि मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा।

परमात्मा ने गीता में कहा हैं मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते...

यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स! तू मन को मुझमें लगा...

शिव आमंत्रण, आबू रोड। गीता में भगवान के महावाक्य हैं 'मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं सूर्य, चांद और तारागण के भी पार परमधाम का वासी हूं। परमात्मा कहते हैं कि मैं प्रकृति को वश करके इस लोक में सतधर्म की स्थापना करने और प्रायः लुप्त हुआ ज्ञान सुनाने आता हूं। वत्स तू मन को मुझ में लगा। मैं तुझे सब पापों से मुक्त करुंगा, मैं तुम्हें परमधाम ले चलूंगा। अब सवाल उठता है कि वह लुप्त हुआ ज्ञान क्या है? यदि वर्तमान में दिया जा रहा ज्ञान सही है तो फिर परमात्मा को इस धरा पर क्यों आना पड़ता है? आखिर इस सृष्टि में सत्य ज्ञान क्यों और कैसे लुप्त हो जाता है? सत्य ज्ञान से मनुष्य दूर क्यों हो जाते हैं? इन सवालों के जवाब स्वयं परमात्मा राजयोग की शिक्षा के आधार पर देते हैं।

परमात्मा कहते हैं- वत्स! तू मन को मुझ में लगा। यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स! तू मन को मुझमें लगा। जैसे एक दिन में कोई विशाल पेड़ तैयार नहीं हो जाता है, उसी तरह आत्मा पर कई जन्मों पर चढ़ी विकारों, पापों की परत एक दिन में दूर नहीं होती है। इसके लिए हमें नियमित, सतत् परमात्मा का ध्यान करना पड़ता है। कर्म में ही योग को शामिल कर कर्मयोगी, राजयोगी जीवनशैली को अपनाना होता है। जब हम मन को एकाग्र कर खुद को आत्मा समझकर निरंतर परमात्मा को याद करते हैं तो उनकी शक्तियों से आत्मा पर लगी विकारों, पापकर्म की मौल धुलती जाती है। धीरे-धीरे एक समय बाद आत्मा, परमात्मा की शक्ति से संपूर्ण पावन, पवित्र और सतोप्रधान अवस्था को प्राप्त कर लेती है।

मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते...

■ परमात्मा ने श्रीमद्भगवद गीता के नौवें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि अवजानन्ति माँ मूढ़ा मानुषी तनुमाश्रितम्, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्। अर्थात् मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते हैं। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूं तो भी व्यक्त भाव वाले मुझे नहीं पहचान सकते हैं। मूढ़मति से तात्पर्य है कि जो परमात्मा के बताए सत्य ज्ञान को स्वीकार नहीं करते हैं।

■ रामायण में लिखा है कि- बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ विधि नाना। आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी (शिव के लिए)।। वह निराकार परमात्मा (ब्रह्मलोक निवासी) बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के काम करता है। फिर भी हजारों भुजा वाला है। बिना मुंह के सारे (छहों) रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।

- मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था।

- महाभारत में लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। सभी वेद और शास्त्रों में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है।

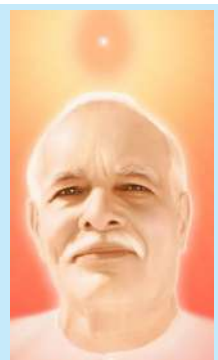

ब्रह्मा मुख से देते हैं दिव्य ज्ञान

शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है कि 'मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा। समस्त संसार को दुःखों से मुक्त करने और नवयुग की आधारशिला रखने के लिए परमात्मा शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ। यहां ललाट से तात्पर्य ज्ञान से है। परमपिता शिव परमात्मा को ज्ञान का सागर कहा जाता है। परमात्मा ज्ञान सागर हैं तो हम आत्माएं उनकी संतान ज्ञान स्वरुप हैं। ज्ञान को शक्ति भी कहा जाता है। इसलिए दुनिया में ज्ञानी महापुरुषों की महिमा और गायन है। जब परमात्मा ब्रह्माजी के तन का आधार लेकर सच्चा गीता ज्ञान देते हैं।

कहां है परमपिता परमात्मा शिव का निवास स्थान?

आज लोगों ने अज्ञानता के कारण मनुष्यों, देवताओं और परमात्मा के निवास स्थान को एक मान लिया है जो मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा के बारे में जानने के बाद यह स्पष्ट रूप से हमें जानने की आवश्यकता है कि परमात्मा और हम सभी मनुष्यात्माएं कहां से इस सृष्टि पर आती हैं। इस सृष्टि चक्र में तीन लोक होते हैं- स्थूल वतन, सूक्ष्म वतन और मूल वतन अर्थात परमधाम।

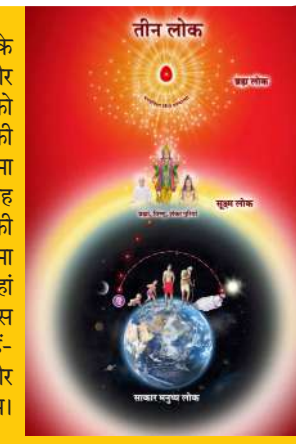

स्थूल लोक... : मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम निवास करते हैं। यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पांचों तत्वों से बनी है। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं। क्योंकि मनुष्य जैसा कर्म करता हैं, वैसा ही फल भोगता है। इसी लोक में ही जन्म-मरण है। अतः इस सृष्टि को विराट नाटकशाला, लीलाधाम भी कहा जाता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन और कर्म तीनों हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र में है। स्थापना, विनाश और पालना- परम आत्मा के दिव्य कर्त्तव्य भी इसी लोक से संबंधित हैं। सृष्टि की हर 5000 वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है और आत्माएं नियत समय पर अपना-अपना पार्ट बजाने इस सृष्टि रंगमंच पर आती हैं।

सूक्ष्मलोक... : सूर्य-चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है। उस लोक में पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णु पुरी और उसके भी पार महादेव शंकर पुरी है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह नहीं हैं। दिव्य चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प और गति तो है, लेकिन वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। इसमें मृत्यु, दुःख या विकारों का नाम निशान नहीं होता। इन तीनों देवताओं द्वारा ही परमात्मा सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालना कराते हैं।

परमधाम... : सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है। इसे अखंड ज्योति ब्रह्मतत्व कहते हैं। यह तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका साक्षात्कार दिव्य चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी धर्मों की आत्माएं अव्यक्त वंशावली में इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म हैं। अतः वहां न सुख है, न दुःख है बल्कि एक न्यारी अवस्था है। इस लोक में अपवित्र अथवा कर्म बंधन वाला शरीर नहीं होता है।

सबने गाई ज्योतिर्लिंग की महिमा

विश्व के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव की महिमा गाई है। जहां श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के पहले ज्ञानेश्वर के रूप में तो श्रीराम ने भी रावण से युद्ध के पहले रामेश्वरम् में शिवलिंग की पूजा की। गुरुवाणी में कहा है- एक ओंकार निराकार तो मुस्लिम धर्म में अल्लाह को नूर कहा। जीजस ने कहा गॉड इज लाइट। इस तरह निराकार ज्योतिर्लिंग परमात्मा का यादगार और स्मरण सभी धर्मों में किया गया है। क्योंकि सारी सृष्टि के रचनाकार, सृजनहार, पालनहार वही परमसत्ता परमात्मा ही हैं।

सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में ज्योति, लाइट, प्रकाश, नूर, ओंकार कहकर परमसत्ता निराकार परमात्मा की सत्ता स्वीकारी

शिव आमंत्रण, आबू रोड

विश्व के प्रायः सभी धर्मों के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सभी मानते हैं परमात्मा एक है। सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं। इस संबंध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद हैं, स्वरूप के संबंध में नहीं। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिंह्न है। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिंह्न। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परपपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिन्दु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है।

रावण को हराने श्रीराम ने की पूजा

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्रीराम ने भी की है, जो वर्तमान समय में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। परमात्मा शिव, श्रीराम के भी आराध्य हैं। यदि श्रीराम भगवान होते तो उन्हें ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या करके ही प्राप्त की थी।

शंकरजी भी लगाते हैं ध्यान

हम शंकरजी को हमेशा ध्यान की मुद्रा में देखते हैं। इससे स्पष्ट है उनके भी कोई आराध्य या देव हैं, जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यान मुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें वह निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

श्रीकृष्ण ने पांडवों से करवाई पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता, सर्वशक्तिवान, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पांडवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है, क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

निराकार, निर्वैर, सतनाम्

सिख धर्म में गुरुनानक देवजी ने कहा है एक ओंकार निराकार। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। 'वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम् है जिसको काल कभी नहीं खा सकता। यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्यनाम कहा। गुरुनानक देव जी को हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

गॉड इज लाइट

जीजस ने परमात्मा को लाइट कहा। उन्होंने कहा गॉड इज लाइट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। आज भी चर्च में एक बड़ी मोमबत्ती जलाते हैं जो परम ज्योति परमात्मा का ही सूचक है।

नूर-ए-इलाही

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वह लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम वा ज्योतिस्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेज। अतः सभी धर्मों ने किसी न किसी रूप मे उस परमसत्ता की शक्ति को स्वीकारा है। इसके अलावा विश्वभर के सभी वेद-शास्त्रों, उपनिषद, ग्रंथ आदि सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के ज्योति स्वरूप की व्याख्या की है। वही त्रिलोकीनाथ, तीनों लोकों के ज्ञाता परमपिता परमेश्वर परमात्मा शिव हैं।

सर्वोच्च सत्ता का अवतरण

चारों युगों में एक बार ही इस सृष्टि पर परमात्मा का अवतरण होता है। जब यह दुनिया पतित भ्रष्टाचारी बन जाती है। आसुरीयता का बोलबाला हो जाता है। ऐसे समय में परमात्मा को इस सृष्टि पर आकर पुनः नई दुनिया की स्थापना का महान कार्य करना पड़ता है। जब दुनिया भौतिकता की चकाचौंध में इतनी डूब जाती है कि उसके ज्ञान नेत्र बंद हो जाने के कारण सत्य और असत्य का कुछ पता ही नहीं चलता है। तब परमात्मा आकर अपने बच्चों को स्वयं की एवं अपनी पहचान बताते हैं। परमात्मा संदेश दे रहे हैं कि जीवन में सच्चे गीता ज्ञान को धारण कर राजयोग मेडिटेशन को अपनाने से सर्वदुखों से छूट जाएंगे। - **राजयोगिनी मोहिनी दीदी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू**

शिव के साथ क्या है रात्रि का संबंध...?

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती को जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है, आखिर क्यों? इसका अर्थ है परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका किसी महापुरुष या देवता की तरह शारीरिक जन्म नहीं होता है। वह अलौकिक जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती कर्त्तव्य वाचक रुप से मनाई जाती है। जब- जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि होती है और पूरी दुनिया दुःखों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वायदे अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं।

21 जन्मों का क्या है राज

परमात्मा इस धरा पर आकर ज्ञान देते हैं और मनुष्य आत्माओं का आह्वान करते हैं कि मेरे बच्चों मुझ से योग लगाओ तो मैं तुम्हें 21 जन्मों की बादशाही दूंगा। तुम्हें जन्मोंजन्म के लिए सर्व दुःखों से मुक्त कर स्वर्णिम दुनिया में ले चलूंगा। कलियुग के कलिकाल में जब मनुष्य आत्मा पापों के बोझ तले तबकर तमोप्रधान हो जाती है तो परमात्मा राजयोग की शिक्षा देकर सतोप्रधान बनने की राह दिखाते हैं। सतयुग में प्रत्येक आत्मा के 8 जन्म होते हैं, वहीं त्रेतायुग में 12 जन्म होते हैं। सतयुग और त्रेतायुग में सर्व आत्माएं सदा सुखी, आनंदमय रहतीं हैं। उस स्वर्णिम दुनिया में दूर-दूर तक दुख को नामोनिशान नहीं होता है। प्रकृति भी सुखदायी रहती है।

परमपिता शिव परमात्मा की रचना हैं- ब्रह्मा, विष्णु, शंकर

शिव आमंत्रण, आबू रोड

परमपिता शिव जी के शंकरजी बेटे हैं। इस सृष्टि के विनाश कराने के निमित्त परमात्मा ने ही शंकरजी को रचा। यहीं नहीं ब्रह्मा, विष्णु, शंकरजी के रचनाकार, सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च सत्ता, परमेश्वर शिव ही हैं। वह ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश और विष्णु द्वारा पालना कराते हैं। शिवलिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा है। परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप हैं। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है चिंह्न। अर्थात् कल्याणकारी परमात्मा को साकार में पूजने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। शिवलिंग को काला इसलिए दिखाया गया क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं।

परमपिता परमात्मा शिव 33 करोड़ देवी-देवताओं के भी महादेव एवं समस्त मनुष्यात्माओं के परमपिता हैं। सारी सृष्टि में परमात्मा को छोड़कर सभी देवी-देवताओं का जन्म होता है।

- शिव और शंकर में वहीं अंतर है जो एक बाप और बेटे में होता है।
- शिव 33 करोड़ देवी-देवताओं के भी महादेव हैं।
- परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश और विष्णु द्वारा पालना कराते हैं।

जबकि परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता और ब्रह्मलोक के निवासी हैं। शंकरजी का आकारी शरीर है। शंकरजी, परमात्मा शिव की रचना हैं। यही वजह है कि शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। ध्यानमग्न शंकरजी की भाव-भंगिमाएं एक तपस्वी के अलंकारी रूप हैं। शंकर और शिव को एक समझ लेने के कारण हम परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे। अब पुनः अपना भाग्य बनाने का मौका है।

शिवलिंग पर तीन रेखाएं ही क्यों?

शिवलिंग पर तीन रेखाएं परमात्मा द्वारा रचे गए तीन देवताओं की ही प्रतीक हैं। परमात्मा शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं। तीन पत्तों का बेलपत्र और तीन रेखाएं परमात्मा के ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता होने का प्रतीक हैं। वे प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। इस सृष्टि के सारे संचालन में इन तीनों देवताओं का ही विशेष अहम योगदान है।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से लाखों लोगों को मिला जीवन का लक्ष्य

सनातन स्वर्णिम संस्कृति को साकार कर रहीं शिव शक्तियां

हीरो के जौहरी से विश्व शांति के मसीहा का सफर...

सन् 1937 की बात है। हीरे-जवाहरात के उस समय के प्रसिद्ध जौहरी दादा लेखराज की जिंदगी सुख-शांतिमय चल रही थी। लेकिन परमात्मा को पाने की दिल में इतनी प्रबल इच्छा शक्ति और उत्कंठा थी कि उन्होंने अपने जीवन में 12 गुरु बनाए थे। वह गुरु की आज्ञा को भगवान की आज्ञा मानते थे। दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे। उन्हें रात्रि में अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं की थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी-देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा को यह बात समझ नहीं आई।

जब वह घर पहुंचे और एक दिन कमरे में बैठे थे, तब उनके अंदर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया। साथ ही स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया कि- **निजानन्द् स्वरूपं शिवोहम्, शिवोहम्। आनन्द स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्। प्रकाश स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्।** इस परिचय के साथ परमपिता परमात्मा ने आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यही से शुरू हुआ परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

नारी को ताज देकर शक्ति स्वरुपा बनाया...

दादा ने अपना सारा कारोबार समेटकर विश्व परिवर्तन के इस महान कार्य की बहुत ही छोटे स्तर से नींव रखी। यह वह दौर था जब नारी की समाज में दशा ठीक नहीं थी। उसे दीन-हीन भाव से देखा जाता था। चूंकि परमात्मा को भारत माता और वंदे मातरम् की गाथा को चरितार्थ भी करना था। नारी को शक्ति स्वरुपा के ताज से सुशोभित करने के लिए उन्होंने बाकायदा नारी शक्ति का एक संगठन बनाया, जिसे नाम दिया गया ओम मंडली। इसमें संचालन से लेकर ज्ञान अमृत देने का दायित्व नारी शक्ति को दिया। नारी के जीवन की दिशा और दशा बदलने की संभवतः इस युग का वह पहला प्रयास था। बाबा की विराट सोच ही थी कि नारी को विश्व शांति और युग परिवर्तन का कलश सौंपकर उनका हर पल मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही परमात्मा ने दादा को दिव्य नाम प्रजापिता ब्रह्मा दिया, जिन्हें हम सभी प्यार से ब्रह्मा बाबा कहने लगे।

दिव्यगुणों की धारणा से दिव्य जीवन बनाने की साधना में जुटे

श्वेतवस्त्रधारिणी, बालब्रह्मचारिणी, राजयोगिनी, तपस्विनी ब्रह्माकुमारियां शिव शक्ति बनकर सनातन स्वर्णिम संस्कृति को साकार कर रहीं हैं। वह अदम्य साहस, शक्ति और सामथ्य से भरपूर है। ब्रह्माकुमारियों के त्याग और तपस्या का परिणाम है कि आज आध्यात्म की गूंज सारे विश्व में सुनाई दे रही है। हर कोई ध्यान की पद्धति सीखने, समझने और आत्मसात करने के लिए लालायित है। क्योंकि मानसिक व्याधियों के लिए राजयोग ध्यान के अलावा दूसरो कोई चारा नहीं है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का एक विचार आज क्रांति बनकर गूंज रहा है। आत्मा का परमात्मा महामिलन कराने में ब्रह्माकुमारियां शांतिदूत बनकर जन-जन को जगा रही हैं।

1937 में हुई ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना

1950 में माउंट से विश्व सेवाओं का शंघनाद

1970 में विदेशी सरजमीं पर शुरुआत

140 देशों में राजयोग का दिया जा रहा संदेश

46 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित

20 लाख लोग विद्यालय के विद्यार्थी

20 प्रभागों से समाज के सभी वर्गों की सेवा

07 पीस मैसेंजर अवार्ड यूएनओ से दिए

वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव आज मूर्तरुप ले रहा है...

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार 1950 में ओम मंडली का स्थानांतरण राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू किया गया। उस वक्त केवल 350 भाई-बहनें ही इस संगठन के सारथी थे। 1950 में बाकायदा एक ट्रस्ट बनाकर ओम मंडली का नाम बदलकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय रखा गया। इसकी प्रथम मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती को नियुक्त किया गया, जिन्हें प्यार से सभी मम्मा कहकर पुकारते थे। माउंट आबू की पावन धरा से पवित्र, राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई-बहनें भारतीय आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का दिव्य संदेश लेकर देशभर में निकले। 'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन' का यह महान संकल्प देखते ही देखते लोगों ने अंतर्मन से आत्मसात किया। इस नये और अनोखे ज्ञान को लोगों ने दिल से स्वीकारा, अपनाया और परमात्म राह पर चल पड़े। आज इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के भारत सहित पूरे विश्व के 140 मुल्कों में करीब पांच हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्रों के माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना और उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का पावन संदेश दिया जा रहा है। 46 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित रुप से तन-मन-धन को परमात्म यज्ञ में स्वाहा कर सेवा में तत्पर हैं। 20 लाख से अधिक इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विद्यार्थी हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् का यह भाव आज मूर्तरुप लेते हुए दिखाई दे रहा है।

14 वर्ष ज्ञान-योग की भट्टी में तपाया...

परमात्मा तो जानी जाननहार है इसलिए उन्होंने भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। भाई-बहनों को ज्ञान और योग की भट्टी में तपाया। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं-बहनें और कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी आध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है। इसी तपस्या का परिणाम है कि संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी को मोस्ट स्टेबल माइंड ऑफ द वर्ल्ड के खिताब से नवाजा गया था। वह 60 वर्ष की उम्र में विदेश की सरजमीं पर पहुंचीं और अकेले दम पर 80 देशों में आध्यात्म का परचम फहराया। 104 वर्ष की आयु में वह अव्यक्त हो गईं। लेकिन अपने पीछे संदेश छोड़ गईं कि नारी जब महान संकल्प के साथ कदम बढ़ाती है तो परमात्मा भी ऐसे बच्चों पर नाज करता है।

कैसी होगी आने वाली स्वर्णिम दुनिया

आने वाली नई सतयुगी स्वर्णिम दुनिया धन-धान्य से भरपूर, हीरे-जवाहरात के महल होंगे। वहां 12 महीने मौसम सदाबहार रहता है। प्रकृति के पांचों तत्व संतुलित और सुखदायी होते हैं। हमारे संकल्पों के आधार पर प्रकृति चलती है। उस दुनिया में प्रत्येक देवी-देवता सदा सर्व गुणों, सर्व शक्तियों और सर्व कलाओं से भरपूर और संपन्न होते हैं। परम वैभव से संपन्न वह दुनिया इतनी सुंदर, सुखमय, आनंदमय होगी जिसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। वहां संकल्प शक्ति के आधार पर दुनिया चलती है। यहां तक कि पशु-पक्षी भी हमारे संकल्पों के आधार पर चलते हैं। जहां दूध-घी की नदियां बहती हैं, गाय और शेर एक घाट पानी पीते हैं। सारा जीवन रास से भरपूर होता है।

क्या है राजयोग मेडिटेशन

राजयोग मेडिटेशन ध्यान की वह अवस्था है जिसमें हम खुद को आत्मा समझकर परमपिता शिव परमात्मा को याद करते हैं। परमात्मा के जो गुण और शक्तियां हैं उनका मन ही मन-बुद्धि द्वारा विजुलाइज करके उनके स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करते हैं। राजयोग अंतर्जगत की यात्रा है, जिसमें हम स्व चिंतन और परमात्म चिंतन करते हैं। जब हम नियमित तौर पर राजयोग ध्यान में जैसे- मैं एक महान आत्मा हूं... मैं भाग्यशाली आत्मा हूं... मैं सफलता मूर्त आत्मा हूं... मैं सतयुगी आत्मा हूं...मेरे सिर पर सदा परमात्मा का वरदानी हाथ है... इन संकल्पों को करते हुए जब हम परमात्मा की दिव्य शक्तियों को बुद्धि के द्वारा मन की आंखों से विजुलाइज करते हैं तो फिर हमारी आत्मा का स्वरूप, संस्कार और विचार उसी रूप में ढलने लगते हैं।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता-

पत्र-व्यवहार का पता-

प्रधान संपादक ▸ बीके कोमल, ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो. 8740060231, 9471854331

» प्रकाशक व मुद्रक : करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित
» प्रधान संपादकः बीके कोमल » संपादकः बीके पुष्पेन्द्र » RNI No.: RAJHIN/2013/53539

राष्ट्रपति ने ब्रह्माकुमारी बहनों को कलश देकर और दीप प्रज्जवलित कर किया बार्षिक थीम का राज्य स्तरीय शुभारंभ

शांत और स्थिर मन से ही विश्व शांति और विश्व एकता की नींव बनती है: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु

मेडिटेशन रुम में ध्यान में मग्न नजर आईं राष्ट्रपति, गुलजार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर में राष्ट्रपति, राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने किया पौधारोपण

शिव आमंत्रण, लखनऊ, उप्र।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने ब्रह्माकुमारी बहनों को एकता और विश्वास का दिव्य कलश देकर और दीप प्रज्जवलित कर वार्षिक थीम का राज्य स्तरीय शुभारंभ किया। सुल्तानपुर रोड, गुलजार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति ने जैसे ही ओम शांति के साथ अपना संबोधन शुरू किया तो पूरा परिसर तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। राष्ट्रपति ने अपने दस मिनट के संबोधन में मन, अध्यात्म, भारत की संस्कृति, मूल्य और सरकार की नीतियों पर बात की।

विश्व एकता और विश्वास के लिए ध्यान (योग) विषय पर संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि हर मनुष्य चाहता है कि दूसरे पर विश्वास करें, लेकिन विश्वास वहीं टिकता है जहां मन शांत, विचार स्वस्थ और भावनाएं शुद्ध हों। जब हम कुछ क्षण रुककर स्वयं से संवाद करते हैं तो इस बात का अनुभव होता है कि शांति और आनंद किसी बाहरी वस्तु में नहीं बल्कि हमारे भीतर है। जब आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है तो प्रेम, भाईचारा, करुणा और एकता जीवन का हिस्सा बन जाती है। शांत और स्थिर मन समाज में शांति का बीज होता है और वहीं से विश्व शांति और विश्व एकता की नींव बनती है। सशक्त आत्मा ही विश्व एकता की संकल्पना को साकार करने की आधारशिला रही है।

उन्होंने आह्वान किया कि आइए शांति को अपने भीतर जगाएं, विश्वास को अपने विचारों में उतारें और एकता को अपने कर्मों में प्रकट करें। हम सब मिलकर एक बेहतर, शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

यह कदम सुंदर विश्व बनाने का संवाहक बनेगा-

ब्रह्माकुमारीज़ की सराहना करते हुए राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा विश्व शांति, मानवीय मूल्य, नारी सशक्तिकरण, आंतरिक जागृति, शिक्षा और ध्यान के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयास वास्तव में प्रेरक और प्रशंसनीय हैं। इस सेवा के लिए मैं सभी ब्रह्माकुमार भाई-बहनों को हृदय से धन्यवाद, अभिनंदन करती हूं। ब्रह्माकुमारीज़ विश्व विद्यालय के गांव-गांव में शिक्षा केंद्र खुले हुए हैं। वहां के भाई-बहन इसी दिशा में समाज को सुख-शांति, आनंद, प्रेम और विश्वास का संवाहक बनकर के जन-जन तक पहुंचाते हैं। मुझे लगता है कि आज का यह कदम पहले वाले को और तीव्र करेगा और सुंदर विश्व बनाने का संवाहक बनेगा।

भारत ने विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश दिया है-

राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति ने सदैव विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश दिया है अर्थात संपूर्ण विश्व हमारा परिवार है। आज जब विश्व कई चुनौतियों का सामना कर रहा है तब यह विचार और अधिक प्रासांगिक बन गया है। मुझे विश्वास है कि इस महासंकट को दूर करने के लिए इस अभियान का प्रभावी योगदान रहेगा। मैं इस अभियान के शुभारंभ के लिए ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई देती हूं।

भारत सरकार की नीतियों और प्रयासों को सराहा-

राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि भारत सरकार समाज को समावेशी, शांतिपूर्ण और मूल्य आधारित बनाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। योग और ध्यान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देना, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस दिवस ऐसे ही कदम हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मूल्य आधारित शिक्षा जीवन को सुदृढ़ बनाने का एक कदम है। राष्ट्रपति ने कहा कि आधुनिक समय में विज्ञान और तकनीकी के बल पर राष्ट्रपति ने कहा कि आज का युग सूचना, प्रौद्योगिकी, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई), डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन और अंतरिक्ष अनुसंधान का युग है। इन क्रांतिकारी परिवर्तनों ने मानव जीवन को अधिक सुविधाजनक, सुलभ और संसाधन समृद्ध बनाया है। आज का मानव पहले की अपेक्षा अधिक शिक्षित और तकनीकी रूप से सक्षम है। साथ ही उसके पास आगे बढ़ने के अनेक अवसर हैं। लेकिन समाज में तकनीकी उन्नति के साथ-साथ तनाव से असुरक्षा, अविश्वास और एकाकीपन बढ़ा है। आज आवश्यक है कि हम केवल आगे बढ़ने की ही नहीं, बल्कि स्वयं के भीतर बढ़ने की यात्रा का भी प्रारंभ करें। इसका कदम ब्रह्माकुमारीज़ उठा रही है।

ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव डॉ. राजयोगी मृत्युंजय भाई ने स्मृति चिंह देकर राष्ट्रपति का सम्मान किया।

स्व परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का प्रथम मार्ग है-

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था विभिन्न आयामों से राष्ट्र निर्माण की गतिविधियां निभा रही है। विश्व की यह विशाल संस्था नारी शक्ति द्वारा संचालित है। राजयोग मेडिटेशन वह साधन है जो व्यक्ति को सद्गुण की ओर अग्रसर करता है। राजयोग से सुख, शांति, पवित्रता जैसे गुण स्वतः आने लगते हैं। मेडिटेशन हमें सिखाता है आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है। राजयोग एक अभ्यास नहीं बल्कि संपूर्ण सकारात्मक जीवनशैली है। मेडिटेशन हमें सृष्टि के चक्र का बोध कराता है। वर्तमान परिस्थितियां हमारे कर्मों का ही कल हैं। राजयोग अपने आप से मिलने की अनुभूति है। जो हमें स्वयं को सुनना और शांत होना सिखाता है। राजयोग मानव चेतना को जागृत करता है और समाज को संगठित करता है। आज यह सभी के लिए अनिवार्य है। स्व परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का प्रथम मार्ग है।

लोगों को देंगे आपसी एकता और विश्वास का संदेश-

गुलजार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी बीके राधा दीदी ने कहा कि भारत और भगवान की राशि एक ही है। उप्र वह महान प्रदेश है जहां जगत नियंता परमात्मा शिव बाबा का विश्व है सबसे बड़ा मंदिर है। जहां मथुरा में श्रीकृष्ण की कर्म भूमि और अयोध्या श्रीराम की चरित्र भूमि है। इस अभियान का उद्देश्य है, हम सभी एक परमात्मा की संतान आपस में भाई-बहन हैं। हमें धर्म, जाति भुलाकर आपस में एकता और भाईचारे के साथ रहना है। अभियान के तहत प्रदेशभर में कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जिनके माध्यम से लोगों को विश्व एकता और आपसी विश्वास का संदेश दिया जाएगा। उड़ीसा के न्याय विद प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक बीके नथमल भाई ने कहा कि जब तक हम अपने अंदर मनोविकारों को दूर नहीं करेंगे, तब तक हमारे अंदर एकता और विश्वास नहीं आएगा। संचालन राजयोगिनी बीके मनोरमा दीदी ने किया।

मुख्यमंत्री बोले- आतंकवाद, उपद्रव के पीछे मन की चंचल प्रवृतियां हैं

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि राष्ट्रपति का जीवन एक शिक्षक के रूप प्रेरक रहा है। शिक्षक, जनसेवक से लेकर राष्ट्रपति भवन तक की उनकी यात्रा संघर्ष की एक मिसाल, प्रेरक और आदर्श रही है। व्यक्ति के बंधन और मोक्ष का कारण उसका मन है। आज दुनिया में जो भी आतंकवाद, उपद्रव है इसके पीछे मन की चंचल प्रवृतियां ही हैं। मन का एक सकारात्मक पक्ष है जो सकारात्मक प्रवृतियों की और ले जाता है, वहीं एक नकारात्मक मन नकारात्मक प्रवृतियों की और ले जाता है। ब्रह्माकुमारी से जुड़े सभी पदाधिकारी राजयोग के माध्यम से सकारात्मक माहौल का निर्माण कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह केंद्र पूरे उत्तर प्रदेश के लिए राजयोग प्रशिक्षण के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करेगा।

गुलजार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर परिसर में किया पौधारोपण

» राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुलजार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर परिसर में पौधारोपण किया।

» राष्ट्रपति ने कुछ समय के लिए मेडिटेशन रुम में परमात्मा शिव बाबा का ध्यान किया।

» उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ स्नेह मुलाकात कर फोटो सेशन में भाग लिया।

» रायपुर से आए चित्रकार, कलाकार हितेंद्र भाई ने सेमीनार हॉल में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और गुलजार दादी की आकर्षक रंगोली बनाई जिसे देखकर लोग स्तब्ध रह गए।

» मथुरा से आए कलाकारों ने सुंदर श्रीकृष्ण, राधा और गोपियों के वेश में नृत्य की प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया।

ये भी रहे मौजूद-

संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके संतोष दीदी, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके डॉ. मृत्युंजय भाई, ज्ञान सरोवर परिसर की निदेशिका राजयोगिनी बीके प्रभा दीदी, अभियंता प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी बीके मोहन सिंघल भाई, राजयोगी बीके सूर्य भाई, सीए बीके ललित भाई, वाराणसी सारनाथ से सबजोन प्रबंधक बीके सुरेंद्र भाई, मीडिया को-ऑर्डिनेटर बीके विपिन भाई, पीआरओ बीके कोमल भाई, शिव आमंत्रण के संपादक बीके पुष्पेंद्र भाई सहित लखनऊ शहर के 400 से अधिक बिजनेसमैन, 100 से ज्यादा डॉक्टर, 300 से ज्यादा प्रशासनिक अधिकारी और ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े तीन हजार से अधिक लोग मौजूद रहे।

संपादकीय

आत्म-जागरण का पावन संदेश

नववर्ष केवल कैलेंडर का परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह आत्मा के भीतर नई चेतना, नई दिशा और नए संकल्पों का आह्वान है। जब एक वर्ष विदा लेता है, तो वह अपने साथ अनुभवों की गठरी छोड़ जाता है—कुछ मीठे, कुछ कड़वे। ऐसे समय में आवश्यकता होती है उस दिव्य शक्ति की, जो मन को शांति, बुद्धि को स्पष्टता और जीवन को पवित्रता प्रदान करे। ब्रह्माकुमारीज़ का शिव आमंत्रण इसी दिव्य मिलन का सौम्य निमंत्रण है। ब्रह्माकुमारीज़ का यह संदेश मानव को बाह्य उपलब्धियों से आगे बढ़कर आंतरिक उत्थान की ओर प्रेरित करता है। नववर्ष के आरंभ में, जब संसार नई योजनाओं और संकल्पों में व्यस्त होता है, तब शिव आमंत्रण हमें याद दिलाता है कि सच्चा नव निर्माण आत्मा से शुरू होता है। परमपिता शिव का स्मरण हमें यह बोध कराता है कि हम देह नहीं, बल्कि शाश्वत, शांत और पवित्र आत्माएँ हैं। यही आत्म-बोध जीवन की दिशा बदल देता है। आज का युग तनाव, असंतुलन और प्रतिस्पर्धा से भरा है। नववर्ष पर अधिकांश संकल्प भौतिक उपलब्धियों तक सीमित रह जाते हैं—धन, पद और सुख-सुविधाएँ। परंतु शिव आमंत्रण इनसे ऊपर उठकर मन की शुद्धता, संबंधों की मधुरता और समाज में शांति के संकल्प का संदेश देता है। जब व्यक्ति स्वयं शांत होता है, तभी परिवार शांत होता है; और जब परिवार शांत होते हैं, तभी समाज में शांति का विस्तार संभव है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रस्तुत राजयोग ध्यान की सरल विधि नववर्ष को सार्थक बनाने का प्रभावी माध्यम है। यह अभ्यास आत्मा को परमात्मा से जोड़कर शक्ति प्रदान करता है, जिससे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन सहज रूप से घटित होते हैं। क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या जैसे विकारों से मुक्त होकर व्यक्ति स्नेह, करुणा और सहयोग का वाहक बनता है—यही नववर्ष का सच्चा उपहार है।

बोध कथा/जीवन की सीख

दीपक और तूफ़ान

एक छोटे से गाँव में हरिश नाम का एक युवक रहता था। वह परिश्रमी था, पर जीवन से हमेशा असंतुष्ट। उसे लगता था कि परिस्थितियाँ उसके विरुद्ध हैं—कभी आर्थिक तंगी, कभी पारिवारिक तनाव, तो कभी लोगों का व्यवहार। वह अक्सर ईश्वर से शिकायत करता, "जब मैं मेहनत करता हूँ, तो फिर मेरे जीवन में शांति क्यों नहीं?"

एक दिन गाँव के बाहर एक संत आए। लोग उनके पास मार्गदर्शन के लिए जाते थे। हरिश भी उनके पास पहुँचा और अपने दुःखों की लंबी सूची सुना दी। संत मुस्कुराए और बोले, "आज संध्या को मेरे साथ नदी किनारे चलो, उत्तर वहीं मिलेगा। संध्या होते ही दोनों नदी किनारे पहुँचे। तेज़ हवा चल रही थी। संत ने हरिश के हाथ में एक दीपक थमा दिया और कहा, "इसे जलाकर बिना बुझाए अपने घर तक ले जाओ।" हरिश ने दीपक जलाया। हवा के झोंके से लौ काँपने लगी। वह घबरा गया, ध्यान से चलने लगा, दोनों हाथों से दीपक को ढँक लिया। रास्ते में कीचड़ था, पत्थर थे, पर उसका सारा ध्यान दीपक पर था। वह गिरते-गिरते बचा, पर दीपक की लौ बुझने नहीं दी।

काफी प्रयास के बाद वह अपने घर पहुँचा। दीपक अब भी जल रहा था। संत ने पूछा, "रास्ते में क्या-क्या देखा?" हरिश बोला, "कुछ नहीं, बाबा। मुझे बस दीपक की लौ बचानी थी।" संत मुस्कुराए और बोले, "यही जीवन का रहस्य है।" हरिश चकित होकर उनकी ओर देखने लगा। संत ने समझाया, "तुम्हारा मन दीपक की तरह है और बाहरी परिस्थितियाँ तूफ़ान की तरह। जब तुम अपना ध्यान समस्याओं, लोगों और परिस्थितियों पर रखते हो, तो मन की शांति बुझ जाती है। पर जब लक्ष्य शुद्ध हो—आत्मा की शांति—तो तूफ़ान भी कुछ नहीं बिगाड़ पाता।"

हरिश ने पूछा, "तो क्या समस्याएँ नहीं आएँगी?" संत ने उत्तर दिया, "आएँगी अवश्य। रास्ता कीचड़ और पत्थरों से भरा ही रहेगा। परंतु यदि ध्यान भीतर के दीपक पर है, तो बाहरी अवरोध तुम्हें डिगा नहीं पाएँगे।" फिर संत ने दीपक की ओर संकेत करते हुए कहा, "इस लौ को आत्मा की चेतना समझो। इसे ईश्वर-स्मृति के तेल से भरते रहो। तब क्रोध, भय, लोभ की हवा इसे बुझा नहीं सकेगी।" उस रात हरिश देर तक सोचता रहा। उसे समझ आया कि वह अब तक जीवन की हर समस्या से लड़ता रहा, पर अपनी आत्मा को मज़बूत करना भूल गया। अगले दिन से उसने शिकायत करना छोड़ दिया और प्रतिदिन कुछ समय मौन में बैठकर अपने भीतर शांति को महसूस करने लगा। उसके जीवन की परिस्थितियाँ वही थीं, पर उसका अनुभव बदल गया था। अब वह परेशान नहीं होता, बल्कि स्थिर रहता। गाँव के लोग आश्चर्य से पूछते, "हरिश, अब तू इतना शांत कैसे है?" वह मुस्कुराकर कहता, "अब मैं तूफ़ान से नहीं लड़ता, बस अपने दीपक को संभालता हूँ।

सीख : जीवन में शांति परिस्थितियों के बदलने से नहीं, दृष्टि के बदलने से आती है। जब आत्मा का दीपक ईश्वर-स्मृति से प्रज्वलित होता है, तब कोई भी तूफ़ान उसे बुझा नहीं सकता।

मेरी कलम से

सुशील भाई (55),
कंस्ट्रक्शन इंजीनियर
हाजीपुर, बिहार

राजयोग ध्यान से छूटा मांस, मदिरा का सेवन, जीवन बन गया आदर्शमूर्त

अमृतवेला में राजयोग का ध्यान बदल देता है जीवन की दिशा

मैं वर्ष 2006 से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रहा हूं। राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से मुझे लगता है कि मेरा नया जन्म हुआ है। इसके पहले में पूरे कलियुगी संसार में डूबा हुआ था। पहले मांस-मदिरा का सेवन करता था। जीवन बुराइयों में लिप्त था, लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ से ज्ञान लेने के बाद जैसे मेरी जिंदगी में नए पंख लग गए। जब मैंने राजयोग का कोर्स शुरू किया तो तीन दिन में ही मुझे ध्यान में गहरी अनुभूति होने लगी। संस्थान की भाग्य विधाता पुस्तक पढ़ते-पढ़ते जैसे इस दुनिया से अलग हो गए। माउंट आबू में परमात्म अनुभूति शिविर में भाग लेने के बाद परमात्मा को पाने की चाह और ईश्वरीय सेवा के कारण मैंने नौकरी छोड़ दी।

इसके बाद ब्रह्माकुमारीज़ की पाठशाला शुरू की। आज परमात्मा का कमाल है कि जीवन के हर क्षेत्र में दिनोंदिन तरक्की कर रहा हूं। पाठशाला में सुबह-शाम 150 से अधिक भाई-बहनें नियमित रूप से मुरली क्लास में आते हैं। साथ ही मेरा निजी व्यवसाय भी बहुत अच्छा चल रहा है। राजयोग के अभ्यास से भौतिकता के साथ आध्यात्मिक दोनों तरह की उन्नति की है।

मेरे जीवन का अनुभव है कि जो भी भाई-बहनों ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े हैं तो यदि अमृतवेला पक्का कर लिया तो जीवन में हर तरह से तरक्की के द्वार खुल जाते हैं। अमृतवेला हमारा भाग्य बनाने की वेला, समय है। सुबह को सुधार लिया तो सबकुछ सुधर जाता है। मेरी दिनचर्या रोजाना सुबह 3.30 बजे शुरू हो जाती है। पहले एक घंटा योग करता हूं और उसके बाद स्नान आदि से निवृत्त होकर सुबह 6 बजे से 7 बजे तक मुरली क्लास का संचालन करता हूं।

परमात्मा का कमाल है कि जीवन के हर क्षेत्र में तरक्की हो रही है। जीवन आनंदमय बन गया है। आध्यात्मिक जीवन में दिनचर्या संतुलित, संयमित होना बहुत जरूरी है। यदि हमारी दिनचर्या नियमित और संयमित रहेगी तो इसका हर एक व्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है। राजयोग ध्यान हमें जीवन जीने की कला सिखा देता है। जीवन को दिव्य और महान बना देता है। मेरा आप सभी पाठकों से यही अनुरोध है कि अपने जीवन में राजयोग का प्रयोग कर इसके चमत्कार अनुभव कर सकते हैं। यह समय अपना भाग्य बनाने का सर्वोत्तम समय है।

आगत के स्वागत में उभरती नव दृष्टि

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 90

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशतनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

जीवन में आत्मिक गुणों एवं शक्तियों के माध्यम से समृद्धशाली हो जाने की स्थितियां ही मंगलकारी स्वरुप को प्रतिपादित करती हैं जिसमें जीवन मूल्य की उच्चता के दर्शन आत्म वैभव के रूप में सदा ही परिलक्षित होते रहते है जिससे आत्मिक शक्ति का व्यवहारिक स्वरूप में प्रस्फुटित होना सहजता से संपन्नता के परिवेश में गतिशील हो जाता है। आत्म चेतना सदा ही स्वयं के नैसर्गिक स्वभाव में स्थित रहती है जिसे धर्मगत व्यावहारिकता के द्वारा पुरुषार्थ की वैचारिक उच्चता के सामर्थ्य से देवात्मा की सम्पन्नता के रूप में रूपांतरित किया जाता है जिससे लोक कल्याणकारी अवस्था का पवित्र क्रियान्वयन संपूर्ण जगत के लिए मंगलकारी स्वरूप में परिणित हो जाए।

आत्म वैभव द्वारा मंगलकारी समृद्धि की अनुभूतिः सद्गुणों के प्रति नैसर्गिक श्रद्धा , आस्था एवं मान्यता का स्थायित्व अंतर्मन को सद्प्रेरणा प्रदान करके भरपूर कर देता है जिसमें आत्मा के स्वमान , स्वरूप और स्वभाव का योगदान सदा ही समाहित रहता है जो जीवात्मा को मनुष्य जन्म - की धन्यता से सराबोर कर देने में पूर्णतः सक्षम हो जाता है । आत्मा की वैभव - संपन्नता से जुड़ी सुखद अनुभूतियां आत्मिक उच्चता का प्रमाण होती हैं जिसे जीवन के व्यावहारिक जगत में मंगलकारी समृद्धि के श्रेष्ठतम स्वरूप द्वारा आत्महित में संलग्नता के साथ-साथ सर्व मानव आत्माओं के कल्याण में प्रतिपादित किया जाना न्याय संगत होता है।

आत्मिक स्वभाव में उच्च दर्शन का स्थायित्व बोधः श्रेष्ठतम स्वरुप का दिग्दर्शन

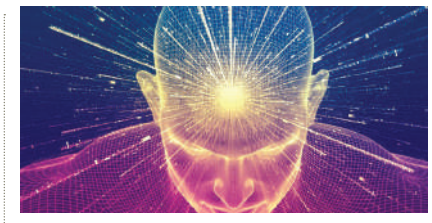

करते हुए जीवात्मा स्वयं को उत्कृष्टता के शिखर पर स्थापित करने हेतु तीव्रतम पुरुषार्थ को आत्मसात करती है तब जीवन में महानता की ऊंचाई पर पहुँचने की अभिलाषा बलवती होकर कर्म क्षेत्र में आत्मिक परिष्कार के कार्य में संलग्न हो जाती है। आत्मगत स्वभाव में धारणात्मक उच्चता के प्रति नैसर्गिक बोधगम्यता अंतर्निहित होती है जो अंतःकरण को सदा अभिप्रेरित करती रहती है जिससे किसी भी स्थिति में जीवन की उच्चतम अवस्था के सानिध्य में धर्म एवं पवित्र कर्म के पथ पर गतिशीलता बनी रहती है।

धर्मगत व्यावहारिकता की सत्यता से रूपांतरित देवात्माः जीवन की संवेदनशीलता का विराट पक्ष व्यक्तिगत गतिशीलता को अग्रसर करने में विशिष्ट योगदान प्रदान करता है जिसमें मानवता की उच्चतम स्थितियों के लिए भागीरथ प्रयास की विभिन्न श्रृंखलाएँ गतिमान रहती हैं और अपेक्षित स्थिति में पुण्यात्मा बन जाने के लिए अंतर्मन से पुरुषार्थ को क्रियान्वित करने में सम्बद्धता बनी रहती है। चेतना की चैतन्यता के सानिध्य में उर्ध्वगामी चिंतन का परिष्कृत स्वरुप ही मानवता के मध्य पुण्य के निर्माण हेतु मनुष्यता को अभिप्रेरित करता है जिसमें आत्मा साक्षी दृष्टा होकर स्वयं को पुण्य कर्म के क्षेत्र में स्थापित कर देती है।

धारणात्मक स्वरूप में गहनतम अनुकरण और अनुसरण

भाव एवं विचार जगत का परिदृश्य जब उच्चतम स्थितियों में स्थापित होकर श्रेष्ठतम स्वरूप को धारण कर लेता है तब जीवात्मा धन्यता से अभिभूत हो जाती है क्योंकि आत्मिक परिवेश दिव्य गुणों एवं शक्तियों से जीवन के व्यावहारिक क्रियान्वयन के अंतर्गत स्वयं को सदा गौरवान्वित अनुभव करने लगता है। मानव जीवन की पवित्रतम भावनात्मक पृष्ठभूमि के सानिध्य में वैचारिक समृद्धि के प्रति संपूर्ण मानव जाति सदा से ही आदर एवं सत्कार प्रदान करती रही है जिसमें संपूर्ण मानवीय विश्वसनीयता उस समय अभिवृद्धि को प्राप्त हो जाती है जब व्यक्ति का व्यक्तित्व मन, वचन एवं कर्म से भी पवित्रता को धारणात्मक स्वरुप में अनुकरण और अनुसरण कर लेता है।

साधक- साध्य के मध्य स्वरूपगत गतिशील साधना : जीवात्मा सदा ही कल्याणकारी नित, नूतन स्वरुप द्वारा स्वयं के पुरुषार्थ में समाहित होकर गतिशील रहती है जिसमें आत्महित की नैतिकता को आचरण से उत्कृष्टता तक पहुँचाने का भगीरथ प्रयास सम्पूर्ण रूप में संपन्न होता है और सर्व मानव आत्माओं के कल्याण का मार्ग सदा के लिए प्रशस्त हो जाता है। साधक और साध्य के मध्य गतिशील साधना की समग्रता सदा जीवात्मा को सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक स्वरुप से विश्लेष्णात्मक अध्ययन के पुरुषार्थ में आचार, विचार एवं व्यवहार को एकाकार करने की स्थिति, अवस्था एवं स्वरुप की व्यावहारिकता को प्राप्त किया जा सकता है जिसके लिए जीवात्मा का सृष्टि अनादि काल से आगमन एवं प्रस्थान की गतिशीलता निरन्तर रूप से विद्यमान है। सृष्टि में जीवात्मा को स्वयं के वास्तविक स्वरुप अर्थात् आत्मानुभूति होते ही संपूर्ण पुरुषार्थ द्वारा पवित्र क्रियान्वयन के श्रेष्ठतम परिणाम को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से चेतना द्वारा सहज ही मंगलकारी समृद्धि के परम सौभाग्यशाली स्वरुप में ग्रहण कर लिया जाता है।

दुनिया को अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिए और आपके पास सर्वश्रेष्ठ लौटकर आएगा

- स्वामी दयानंद सरस्वती

स्त्री को पुरुषों की तरह अधिकार प्राप्त हों, स्त्री ही जननी है, हमें हर हाल में स्त्री का सम्मान करना चाहिए

- राजा राममोहन राय, समाज सुधारक

ओम शांति रिट्रीट सेंटर के रजत जयंती वर्ष के 'शुभारंभ - रश्मियां' में बोले उप राष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन-

समृद्ध आध्यात्मिक परंपराएं भारत को बना रही हैं विश्व गुरु

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम, हरियाणा।

भारत के उप राष्ट्रपति एवं राज्यसभा के सभापति सीपी राधाकृष्णन ने कहा कि भारत के ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों की साधना ने विश्व को ध्यान, आत्मबल और सत्य के मार्ग पर अग्रसर किया है। राजयोग, विपस्सना और तपस्या जैसी समृद्ध आध्यात्मिक परंपराएं आज भारत को विश्व गुरु बना रही हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के संकल्प में भी यही आध्यात्मिक शक्ति राष्ट्र का मार्गदर्शन कर रही है। उप राष्ट्रपति गुरुग्राम के बहोड़ा कलां में स्थित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ओम शांति रिट्रीट सेंटर के रजत जयंती वर्ष के शुभारंभ अवसर पर 'शुभारंभ - रश्मियां' कार्यक्रम को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

उप राष्ट्रपति ने इस अवसर पर ओम शांति रिट्रीट सेंटर के रजत रश्मियां के नाम से मनाए जाने वाले रजत जयंती वर्ष का शुभारंभ किया। उनके हरियाणा आगमन पर उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने स्वागत किया। कार्यक्रम में ओम शांति रिट्रीट सेंटर की निदेशका बीके आशा दीदी, ज्यूरिस्ट विंग की अध्यक्षा राजयोगिनी बीके पुष्पा दीदी, अफ्रीका के देशों की क्षेत्रीय समन्वयक राजयोगिनी बीके वेदांती दीदी, माउंट आबू से महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई, ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी बीके शुक्ला दीदी, महिला विंग की अध्यक्षा राजयोगिनी बीके चक्रधारी दीदी ने उप राष्ट्रपति का अभिनन्दन किया।

ध्यान आत्मा, मन और शरीर को शांति देता है-

उप राष्ट्रपति ने कहा कि ध्यान आत्मा, मन और शरीर को गहन शांति प्रदान करता है। ध्यान की अवस्था में सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं और आंतरिक ऊर्जा का संचार होता है। इसी ध्यान की अनुभूति के बीच, समाज के विभिन्न क्षेत्रों—एविएशन, चिकित्सा, विज्ञान, प्रशासन, सामाजिक सेवा और राजनीति से आए हुए व्यक्तित्वों से परिचय हुआ, जो इस बात का प्रमाण है कि ध्यान और आध्यात्मिक शांति हर मनुष्य की आवश्यकता है।

मन को जीतना ही सफलता का प्रथम सूत्र है

उप राष्ट्रपति ने कहा कि धर्म का पालन शांति और विजय दोनों देता है। मन को जीतना ही सफलता का प्रथम सूत्र है यही गीता का संदेश है। जब तक हम भीतर सकारात्मकता, विनम्रता और सेवा-भाव नहीं अपनाते, तब तक मन की शांति संभव नहीं। तमिल परंपरा के महान कवि तिरुवल्लुवर ने कहा है—मन में लाखों विचार आते हैं, पर जीवन का अगला क्षण भी निश्चित नहीं। अतः चिंता नहीं, बल्कि सद्कर्म, सद्भाव और समाज-सेवा ही मनुष्य को सच्ची शांति प्रदान करते हैं। उन्होंने मानव हित में संस्थान द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना भी की।

उप राष्ट्रपति ने कहा कि कोविड महामारी के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा विश्व के अनेक देशों को निःशुल्क वैक्सीन उपलब्ध कराना भारत की "वसुधैव कुटुम्बकम" की सनातन भावना का श्रेष्ठ उदाहरण है। खुद के लिए जीते हुए भी सबके लिए जीने की यही मानवीय सोच भारत को वैश्विक शांति, करुणा और मानवता का मार्गदर्शक बनाती है। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में सदैव केवल अपने ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के कल्याण का संदेश निहित है। उप राष्ट्रपति ने कहा कि आध्यात्मिकता हमारी सबसे बड़ी शक्ति है यह प्रत्येक मनुष्य के भीतर विद्यमान होती है, बस आवश्यकता है उसे पहचानकर जीवन में उतारने की।

राजयोग से कर रहे विश्व परिवर्तन का कार्य-

संस्थान के महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान विश्व में महिलाओं द्वारा संचालित एकमात्र आध्यात्मिक संगठन है। जिसने बहुत कम समय में विश्व के 110 से भी अधिक देशों में हजारों सेवाकेंद्र खोले हैं। संस्थान राजयोग के माध्यम से विश्व परिवर्तन का कार्य कर रहा है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने कहा कि युग परिवर्तक केवल एक परमात्मा ही है। परमात्मा हमें ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। उन्होंने कहा कि देह का अभिमान ही बुराइयों की मूल वजह है। इसलिए परमात्मा हमें आत्मा का ज्ञान देते हैं। व्यावहारिक शुद्धि ही परिवर्तन का आधार है। उन्होंने रजत रश्मियां थीम के अंतर्गत वर्षभर होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी। उनमें से मेरा घर स्वर्ग अभियान प्रमुख है।

राजयोग से कराई शांति की अनुभूति-

संस्थान के अफ्रीका महाद्वीप की क्षेत्रीय संयोजिका राजयोगिनी वेदांती दीदी ने सबको राजयोग के अभ्यास से गहन शांति की अनुभूति कराई। अहमदाबाद से राजयोग शिक्षिका डॉ. दामिनी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विशेष रूप ओआरसी के सदस्यों द्वारा सामूहिक नृत्य प्रस्तुत हुआ।

केंद्र की राजयोग शिक्षिका बीके हुसैन ने मंच संचालन किया। कार्यक्रम में संस्थान के बीके सदस्यों सहित चार हजार से भी अधिक लोगों ने शिरकत की। इस अवसर पर उप राष्ट्रपति के सेक्रेटरी अमित खरे, डीसी अजय कुमार, जॉइंट सीपी संगीता कालिया, डीसीपी ट्रैफिक राजेश मोहन, एसडीएम दिनेश लुहाच सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

जीवन का सार समझने की शक्ति है आध्यात्मिकता : राव नरबीर सिंह

हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि मनुष्य के जीवन में पारस्परिक द्वेष का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। यदि हम एक-दूसरे के प्रति सद्भाव बनाए रखें, तो जीवन स्वाभाविक रूप से सहज, सुंदर और संतुलित बन जाता है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता का अर्थ किसी धर्म विशेष से जुड़ना नहीं, बल्कि जीवन के सार को समझना है। जब व्यक्ति आध्यात्मिक दृष्टि विकसित करता है, तो उसके विचार, व्यवहार और दुनिया को देखने का नजरिया बदल जाता है। मन में सकारात्मकता बढ़ती है और हर परिस्थिति तथा हर व्यक्ति में अच्छाई दिखाई देने लगती है, जिससे भीतर नई ऊर्जा का संचार होता है। राव ने कहा कि जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने, सही निर्णय लेने और सच्चे अर्थों में विजय प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक शिक्षाएं मार्गदर्शन और गहरी समझ प्रदान करती हैं।

शिक्षक के अंदर करुणा का भाव जरूरीः डॉ. अमित दत्ता

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ के भोड़ाकलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में शिक्षाविदों के तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन शिक्षा प्रभाग द्वारा अवेकनेड एजुकेटर्स इनलाइटेन्ड जेनरेशन विषय पर किया गया। इसमें अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआइसीटीइ) के निदेशक डॉ. अमित दत्ता ने कहा कि देह भाव के कारण मनुष्य का ध्येय छोटा हो गया है। प्राचीन काल में शिक्षा के माध्यम से सामाजिक कार्य होते थे। लेकिन सामाजिक ताना-बाना बिखरने से शिक्षा का प्रभाव कम हो गया। शिक्षक के अंदर करुणा का भाव जरूरी है। गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति संजय कौशिक ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में आध्यात्मिक मूल्यों पर जोर दिया जाना एक अतुलनीय कार्य है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने कहा कि मनुष्य सब कुछ सीख चुका है। लेकिन मनुष्य-मनुष्य की तरह रहना भूल गया है। आध्यात्मिकता हमें जागरूक करती है। एक अच्छे शिक्षक के अंदर अच्छे विद्यार्थी का होना जरूरी है। हरीनगर से संबंधित सेवाकेंद्रों की निदेशिका राजयोगिनी शुक्ला दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

योग से कर्मों में आती है कुशलता : आशा दीदी

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ के भोड़ाकलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में चार दिवसीय विशेष योग तपस्या भट्टी संस्थान के आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसंधान केंद्र (स्पार्क) द्वारा कर्मयोग से कर्मातीत विषय पर आयोजित की गई। इसमें देशभर से संस्थान के एक हजार से भी अधिक सदस्य सम्मिलित हुए।

ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने कहा कि कर्म और योग दोनों साथ-साथ होना ही कर्मयोग है। जिससे कर्म योगयुक्त होते हैं। योग में किए गए कर्म हमें शक्ति प्रदान करते हैं। योगयुक्त होकर किए गए कर्मों में कुशलता आती है। हमारे कर्मों को देखकर दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है। हमारा चेहरा हमारे विचारों का प्रतिबिम्ब है। कर्मातीत का अर्थ ही है कि कर्म हमें प्रभावित न करें। कर्मयोग के माध्यम से ही हम कर्मातीत बन सकते हैं।

स्पार्क विंग की अध्यक्षा राजयोगिनी अम्बिका दीदी ने कहा कि मनुष्य जीवन में कर्मों का विशेष महत्व है। योग से ही कर्म सुकर्म बनते है। राजयोग के अन्दर सभी प्रकार के योग समाए हैं। राजयोग हमें स्वराज्य अधिकारी बनाता है। स्वराज्य अधिकारी ही अपनी कर्मेंद्रियों पर नियंत्रित कर सकता है। बीके विजय दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए शुभ चिंतन बहुत जरूरी है। बीती हुई बातों का चिंतन ही आत्मा को कमजोर बनाता है। स्पार्क विंग के राष्ट्रीय संयोजक बीके श्रीकांत ने भी अपने विचार रखे।

आत्म दर्शन भवन की सिल्वर जुबली मनाई

शिव आमंत्रण, सिकंदराबाद, तेलंगाना। ब्रह्माकुमारीज़ के आत्मा दर्शन भवन का सिल्वर जुबली भव्य समारोह इम्पीरियल गार्डन्स में आयोजित मनाया गया। इसमें देश-विदेश से हजारों लोगों ने भाग लिया। माउंट आबू से अतिथि के रूप में अतिरिक्त महासचिव बीके मृत्युंजय भाई, महिला प्रभाग की नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके शारदा दीदी, आवास-निवास विभाग के प्रमुख बीके देव भाई ने मुख्य रूप से भाग लिया। साथ ही आंध्र प्रदेश विधानसभा के चीफ व्हिप जीवी अंजनयलु, पूर्व मुख्य न्यायाधीश वी. ईश्वरैया, जीवीपीआर इंजीनियर्स के संस्थापक जीएसपी वीरा रेड्डी, प्रगति ग्रुप के चेयरमैन डॉ. जीबीके राव सहित कई प्रतिष्ठित उद्योगपति व सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद रहे। बीके डॉ. पी. कस्तूरी एवं बीके डॉ. पी. गांधिया को सम्मानित किया गया।

संगम अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, घुवारा/छतरपुर, मप्र | संगम- गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन अभियान के अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें राजयोगिनी बीके नीतू बहन, बीके सुलेखा बहन ने सभी को अभियान के उद्देश्य के बारे में बताते हुए घर के बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करने का आह्वान किया। इस मौके पर भगवा थाना प्रभारी कृपाल मार्को, मंडल अध्यक्ष रवि राजा अन्य समाजसेवी मौजूद रहे।

राज्यपाल ने भरा पीस अपील प्रोजेक्ट फार्म

शिव आमंत्रण, नवसारी, गुजरात | ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर मध्य प्रदेश के राज्यपाल मांगूभाई पटेल के आगमन पर उन्होंने गुजरात जोन द्वारा चलाए जा रहे बिलियन मिनट्स ऑफ़ पीस अपील प्रोजेक्ट का फॉर्म भरा। साथ ही इस अभियान को सराहनीय कदम बताया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके गीताबेन ने राज्यपाल को अभियान के बारे में विस्तार से बताया। साथ ही राजयोग मेडिटेशन पर चर्चा की।

शिव आमंत्रण, बैतूल, मप्र | ब्रह्माकुमारीज़ के कला एवं संस्कृति प्रभाग के अंतर्गत भाग्यविधाता भवन में सृजन साहित्य कुंज द्वारा भव्य काव्य संध्या का आयोजन किया गया, जिसे इस वर्ष "आसावरी-2025" नाम दिया गया। कार्यक्रम में कवयित्रियों एवं साहित्यप्रेमियों ने कविताओं के माध्यम से विभिन्न सामाजिक, आध्यात्मिक और प्रेरणादायक विषयों पर भावपूर्ण प्रस्तुति दी। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मंजू दीदी ने राजयोग का महत्व बताया।

अयोध्या में संतों ने किया मेरा भारत, नशामुक्त भारत अभियान का शुभारंभ

शिव आमंत्रण, अयोध्या, उप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ के वजीरगंज, अयोध्या स्थित संस्था के सभागार में ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग द्वारा भारत सरकार के सहयोग से चलाए जा रहे देशव्यापी अभियान मेरा भारत, नशामुक्त भारत का अयोध्या में नवीन शुभारंभ संत-महात्माओं द्वारा किया गया।

राम मंदिर आंदोलन के प्रमुख प्रणेता रहे श्रीराम मंदिर तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास महाराज के उत्तराधिकारी महंत कमलनयन दास महाराज और राम मंदिर आंदोलन के ही दूसरे प्रणेता महंत डॉ. राम विलास वेदांती महाराज, श्रीराम मंदिर के पूर्व मुख्य पुजारी रहे स्व. महंत आचार्य सत्येन्द्र दास महाराज के उत्तराधिकारी महंत प्रदीप महाराज, अयोध्या जिला पंचायत अध्यक्ष पति आलोक सिंह, मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल, ब्रह्माकुमारीज़ वाराणसी परिक्षेत्र के प्रबंधक राजयोगी बीके दीपेन्द्र भाई, वरिष्ठ राजयोगी बीके पंकज भाई, अयोध्या वजीरगंज प्रभारी बीके शशी दीदी, बीके रणधीर, मुख्यालय के राजयोगी बीके रामसुख मिश्रा, बीके संदीप, बीके रामेश्वर, बीके मनीषा बहन के साथ बलरामपुर प्रभारी बीके अमिता दीदी, अयोध्या धाम शाखा प्रभारी बीके सुधा दीदी, दर्शन नगर प्रभारी बीके माधुरी दीदी आदि की उपस्थिति में 'मेरा भारत, नशामुक्त भारत' अभियान का शुभारंभ हुआ। महंत कमल नयन दास महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का अभियान ही पूरा-पूरा राष्ट्र और विश्व की समरसता के लिए चल रहा है। ऐसी संस्था से राष्ट्र से विषमता दूर होगी, आपसी प्रेम होगा, समता और समरसता स्थापित होगा, देश समृद्धशाली बनेगा, देश हमेशा-हमेशा के लिए अखंड होगा।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, रीवा, मप्र | मध्य प्रदेश के उपमुख्यमंत्री एवं लोक स्वास्थ्य तथा चिकित्सा शिक्षा मंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने लक्ष्मण बाग संस्थान से मेरा रीवा - नशा मुक्ति, स्वच्छ, स्वस्थ और स्वर्णिम रीवा" परियोजना का शुभारंभ किया।

शिव आमंत्रण, मुंदरा कच्छ (गुजरात) | एडब्ल्यूएल एग्री बिजनेस लिमिटेड में औद्योगिक और दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता की आवश्यकता विषय पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ, बीके आमोद भाई ने विचार रखे। बीके सुशीला बहन ने राजयोग से गहन शांति की अनुभूति कराई।

शिव आमंत्रण, केरेडारी (झारखंड) | केंद्रीय कारागृह (जेल) में बंद कैदियों को कर्म गति और व्यवहार शुद्धि विषय पर माउंट आबू से आए बीके भगवान भाई ने अपने विचार व्यक्त किए। केरेडारी सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके सरिता बहन, जेलर उदय बिहा, बीके भीम भाई, बीके हरि भाई , बीके अमित भाई, बीके उपेन्द्र भाई, बीके राजेंद्र भाई भी उपस्थित रहे।

शिव आमंत्रण, बिजावर, छतरपुर, मप्र | सरस्वती विद्या मंदिर विद्यालय में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सम्मान के साथ वृद्धावस्था कार्यक्रम आयोजित किया गया। बीके प्रीति दीदी ने बच्चों को दादा-दादी, नाना नानी का सम्मान करने की सीख दी। बीके अवधेश भाई ने भी संबोधित किया।

शिव आमंत्रण, खजुराहो, मप्र | संगम- गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन अभियान के अंतर्गत बमीठा के आरडीएस स्कूल में कार्यक्रम किया गया। इसमें बीके नीरजा बहन, बीके प्रीति बहन, बीके पुरुषोत्तम भाई, बीके राम भाई ने अपने विचार व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों को मोटिवेट किया। इस दौरान प्राचार्य रेखा सिंह बघेल सहित पूरा स्कूल स्टाफ मौजूद रहा। विद्यालय के संचालक पुष्पेंद्र सिंह बघेल ने कहा कि अगर आपको धरती पर स्वर्ग देखना है तो माउंट आबू धरती का सबसे अच्छा और जीते जी देखने वाला स्वर्ग है, इसीलिए जीते जी स्वर्ग देखने के लिए आप सब माउंट आबू अवश्य जाएं और प्रतिदिन मेडिटेशन भी किया करें।

राष्ट्रपति ने कहा- बीके परिवार द्वारा दिया गया प्रेम और सम्मान प्रेरणादायी है

सेट विंग के पदाधिकारियों ने राष्ट्रपति से की मुलाकात

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली।

ब्रह्माकुमारीज़ के शिपिंग, एविएशन एवं टूरिज्म (सेट) विंग के 37 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से सौहार्द्रपूर्ण भेंट की। यह मुलाकात आध्यात्मिक सेवाओं और सामाजिक क्षेत्र में सेट विंग के योगदान को साझा करने का महत्वपूर्ण अवसर बनी।

विंग की अध्यक्षा राजयोगिनी बीके मीरा दीदी ने नेतृत्व में राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी बीके कमलेश दीदी, मुख्यालय समन्वयक बीके संतोष भाई, तमिलनाडु की ज़ोनल को-ऑर्डिनेटर बीके मुत्थुमणि सहित देशभर से आए प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में सेट विंग द्वारा देशभर में किए जा रहे सामाजिक, आध्यात्मिक एवं मूल्य-आधारित सेवा कार्यों की विस्तार से राष्ट्रपति को जानकारी दी।

इस वर्ष की विशेष थीम मेरी संस्कृति, मेरी पहचान पर प्रकाश डालते हुए बीके मीरा दीदी ने भारत की प्राचीन संस्कृति, अध्यात्म और जीवन मूल्यों को गर्व की धरोहर बताया। राष्ट्रपति मुर्मू ने ब्रह्माकुमारीज़ के सेवा कार्यों, आधुनिक तकनीकी उपयोग तथा आध्यात्मिक सशक्तिकरण की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

उन्होंने कहा कि बीके परिवार द्वारा दिया गया प्रेम, सम्मान और सकाश अत्यंत प्रेरणादायी है। उन्होंने संगठन के मिशन में सहयोग देने का आश्वासन भी दिया। इस मुलाकात का वातावरण सम्मान, प्रेरणा और आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर रहा। प्रतिनिधिमंडल ने मूल्यनिष्ठ भारत के निर्माण के लिए सेवा गतिविधियों को और अधिक विस्तार देने का संकल्प व्यक्त किया।

राष्ट्रीय एकता रैली का ब्रह्माकुमारीज़ ने किया जोरदार स्वागत

अटलादरा सेवाकेंद्र पहुंचे केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा, राजयोग मेडिटेशन पर की चर्चा

शिव आमंत्रण, अटलादरा, बड़ोदरा| भारत के लौह पुरुष और भारत को अखंड राष्ट्र के सूत्र में पिरोने के सूत्रधार महानायक सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जन्म जयंती पर वड़ोदरा में राष्ट्रीय एकता रैली निकाली गई जिसमें भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, गुजरात के भाजपा अध्यक्ष जगदीश विश्वकर्मा, सांसद डॉ. हेमांग जोशी, वड़ोदरा के भाजपा अध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश सोनी, सभी विधायक, वरिष्ठ पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता रैली में सम्मिलित हुए।

रैली का ब्रह्माकुमारीज़ अटलादरा के भाई-बहनों द्वारा उत्साह के साथ स्वागत किया गया। जिसके बाद भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्ढा सहित सभी भाजपा के पदाधिकारी सेवाकेंद्र पर पधारे और मेडिटेशन रूम में 5 मिनट ध्यान किया। इसके बाद सेवाकेंद्र की संचालिका बीके डॉ. अरुणा बहन ने राष्ट्रीय अध्यक्ष नड्डा को संस्था की सेवाओं के विषय में अवगत कराते हुए वर्तमान में गुजरात जोन द्वारा चलाए जा रहे विश्व शांति हेतु 100 करोड़ मिनट शांति योगदान कार्यक्रम और राजयोग के विषय में चर्चा की। इस पर उन्होंने प्रतिदिन 5 मिनट विश्व शांति के लिए योग करने का संकल्प लेते हुए संकल्प फॉर्म भरा और इस कार्यक्रम की सराहना की। साथ ही माउंट आबू की यात्रा के अनुभव शेयर किए।

परमात्म अनुभूति का दिव्य स्थल बनेगा प्रभु मिलन भवन

शिव आमंत्रण, पुणे, महाराष्ट्र | ब्रह्माकुमारीज़ के मीरा सोसायटी पुणे के अंतर्गत प्रभुमिलन भवन सेवाकेंद्र का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। भवन का उद्घाटन महाराष्ट्र के जलसंपदा मंत्री डॉ. राधाकृष्ण विखे पाटील, ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त प्रशासिका राजयोगिनी संतोष दीदी, मीरा सोसायटी सबजोन की निदेशिका राजयोगिनी सुनंदा दीदी, मीरा सोसायटी की संचालिका राजयोगिनी नलिनी दीदी, सहसंचालिका राजयोगिनी ऊषा दीदी, माउंट आबू से बीके भानुप्रकाश भाई, ग्राम विकास प्रभाग के क्षेत्रीय समन्वयक बीके दशरथ भाई, बीके राजेश भाई, लोणी की प्रभारी बीके आशा बहन के आतिथ्य में किया गया। समारोह में बड़ी संख्या में समाजसेवी, प्रशासनिक अधिकारी और विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने भाग लिया। प्रभुमिलन भवन के माध्यम से क्षेत्र में एक सशक्त आध्यात्मिक केंद्र स्थापित होगा, जहां लोगों को मनोबल, आत्मबल और ईश्वरीय शक्ति का अनुभव कराने हेतु विविध सेवाएं संचालित

की जाएंगी। इस दौरान खांसदार डॉ. सुजयदादा विखे पाटील, चेयरमेन, प्रवरा नगर संस्था, शालिनीताई विखे पाटील, अध्यक्षा, जिल्हा परिषद, अहिल्यानगर सहित अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, अंबिकापुर, छग | जनजातीय गौरव दिवस के समापन समारोह में शामिल हुई राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से बीके विद्या दीदी ने मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात एवं पुष्प गुच्छ भेंट किया। इस दौरान बीके पुष्पा बहन, बीके पार्वती बहन व बीके खिलानंद भाई भी मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, बोत्सवाना | राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के बोत्सवाना राज्य दौरे पर पहुंचने पर ब्रह्माकुमारीज़ प्रतिनिधिमंडल ने विशेष स्वागत किया। बोत्सवाना स्थित भारत के उच्चायुक्त भारत कुमार कुत्थाटी, बीके प्रतिभा बहन (केन्या), बीके उर्वशी बहन (जिम्बाब्वे), बीके दीप्ति बहन (दक्षिण अफ्रीका), बीके उषा बहन (गैबोरोन) और बीके मारी भाई (गैबोरोन) मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली | ब्रह्माकुमारीज़ के सिक्योरिटी सर्विस विंग के पदाधिकारियों ने गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व राजयोगिनी बीके शुक्ला दीदी ने किया। उनके साथ बीके सारिका बहन, बीके स्नेहा बहन और कैप्टन शिव सिंह (हरि नगर, दिल्ली) भी उपस्थित रहे। इस दौरान दिल्ली में पैरामिलिट्री अधिकारियों हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा आवासीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए नामांकन संबंधी प्रस्तावों पर चर्चा की।

शिव आमंत्रण, गुलाबगंज, मप्र | केन्द्रीय कृषि एवं ग्राम विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान के गुलाबगंज क्षेत्र में आगमन पर बीके रेखा दीदी, बीके रुक्मणी दीदी, बीके अनु बहन, बीके नन्दनी बहन ने मुलाकात कर स्मृति चिंह्न भेंट किया।

शिव आमंत्रण, जालंधर | हरियाणा के मुख्यमंत्री को ज्ञान चर्चा के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए बीके विजय बहन, बीके संधीरा बहन। साथ में हैं कुमार स्वामी एवं शीतल विज, मुख्य संपादक दैनिक सवेरा समाचार पत्र, श्री देवी तालाब मंदिर प्रबंधक कमेटी के प्रधान।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के साकार संस्थापक ब्रह्मा बाबा की 57वीं पुण्यतिथि पर विशेष....

विश्व शांति का संदेश लेकर आया एक 'अलौकिक फरिश्ता'

» दादा लेखराज ने दिया दुनिया को नया विचार... हम बदलेंगे, जग बदलेगा, स्व परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का आधार है

» वर्ष 1937 में शुरु किया गया विश्व शांति का यह अभियान आज बन चुका है जन आंदोलन

» संस्थान से 25 लाख से अधिक लोग जुड़ कर चल रहे आध्यात्म और मूल्यों की राह पर, जीवन बना रहे दिव्य और महान

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

नारी तुम ममता की मूरत मातृ शक्ति हो... नारी तुम अबला नहीं सबला हो.. तुम ही भाग्यविधाता, कुलतारिणी और जगत कल्याणी हो...तुम शक्ति हो... उठो जागो और अपने स्वमान को याद करो... तुम्हें ही ज्ञान की मशाल लेकर इस विश्व का कल्याण करना है... स्वयं को शक्तिस्वरूपा बनाकर विश्व को नई राह दिखानी है... तुम्हें ही भारत की संस्कृति आध्यात्मिकता और राजयोग को जन-जन तक पहुंचाकर इस धरा को फिर से पावन, देवभूमि और स्वर्णिम दुनिया बनाना है... हे! देवियों जागो और विश्व को शांति का पैगाम दो। तुम्हें ही स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन लाना है।

इस संकल्प को साकार करने और विश्व शांति का संदेश जन-जन को देने के लिए इस ऐतिहासिक, जग परिवर्तन की नींव वर्ष 1937 में दादा लेखराज कृपलानी (ब्रह्मा बाबा) ने रखी। ये वह समय था जब नारी को घर की चारदीवारी से बाहर निकलना मुश्किल था। स्त्री शिक्षा और उनका समाज में मान-सम्मान न के बराबर होने के साथ बालिका शिक्षा को समाज के नीति-नियंता जरूरी नहीं समझते थे। पुरुष प्रधान समाज उनके दमन और शोषण को अपनी शान समझता था। परमात्मा पिता की आज्ञानुसार भारतीय संस्कृति आध्यात्म एंव राजयोग की शिक्षा से विश्व के हर एक नागरिक को प्रशिक्षित करने के लिए दादा लेखराज ने 'ओम मंडली' नाम से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (विश्व एक परिवार है) की आधारशिला रखी। इस कार्य में नारी को आगे किया ताकि उसे आध्यात्मिक ज्ञान, योग, दिव्य गुणों की धारणा और ब्रह्मचर्य के बल से शक्ति संपन्न बनाया जा सके। ताकि जब वह विश्व में ज्ञान गंगा और शक्ति स्वरूपा बनकर निकलें तो लोगों पर उनका प्रभाव हो।

सिंध प्रांत में हुआ था दादा लेखराज का जन्म

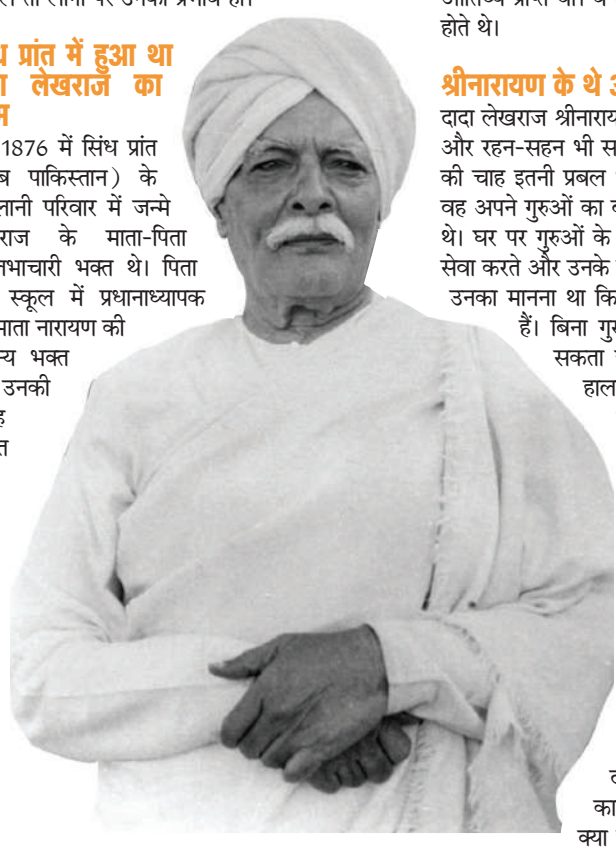

वर्ष 1876 में सिंध प्रांत (अब पाकिस्तान) के कृपलानी परिवार में जन्मे लेखराज के माता-पिता वल्लभाचारी भक्त थे। पिता एक स्कूल में प्रधानाध्यापक थे। माता नारायण की अनन्य भक्त थीं। उनकी सुबह भक्ति से शुरू होती थी और रात भी भक्ति में खत्म होती थी। लेखराज के माता-पिता का क्षेत्र में काफी प्रभाव था और लोग उन्हें आदरभाव देते थे। इस कारण लेखराज को भक्तिभाव के संस्कार बचपन में ही विरासत के रूप में मिले। बचपन में ही उनकी माता का निधन हो गया और कुछ समय बाद पिता का साया भी सिर से उठ गया। उसके बाद उनकी पालना चाचा ने की। चाचा गेहूं के व्यापारी थे। इस तरह लेखराज भी व्यापार में चाचा के साथ हाथ बंटाने लगा। लेखराज में ईमानदारी और दयाभाव इतना था कि वह गेहूं तौलते समय ज्यादा तौलते थे। कोई गरीब ग्राहक आ जाता तो उसे मुफ्त में भी दे देते थे। इससे कई बार चाचा की डांट भी खानी पड़ जाती थी।

गेहूं के व्यापारी से बने प्रसिद्ध जौहरी

लेखराज की बुद्धि बचपन से ही तीक्ष्ण व कुशाग्र थी। इससे वह कुछ ही समय में गेहूं के एक छोटे से व्यापारी से प्रसिद्ध जौहरी बन गए। उन्हें हीरे-जवाहरातों की अचूक परख थी। वे हीरों की पुडिय़ा को देखते ही उसका मूल्य एक मिनट में बता देते कि व्यापारी दंग रह जाते थे। व्यापारी स्वयं जो हीरे आदि खरीदते थे, उसका भी मूल्य कराने के लिए वे दादा के पास ले आते थे। अपने ईमानदारी और सच्चाई के गुण के कारण लेखराज राजाओं-महाराजाओं से लेकर धनाढ्य व्यक्तियों में प्रसिद्ध हो गए। लेखराज का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था जो एक बार उनके संपर्क में आता वह सदा उनका गुणगान करता। तत्कालीन वाईसराय आदि से भी उनका मेल-मिलाप था और नेपाल के राज्यकुल तथा उदयपुर के महाराजा का उन्हें विशेष आतिथ्य प्राप्त था। वे उनके राज दरबार में भी आमंत्रित होते थे।

श्रीनारायण के थे अनन्य भक्त...

दादा लेखराज श्रीनारायण के अनन्य भक्त थे। खान-पान और रहन-सहन भी सात्विक था। उन्हें भगवान को पाने की चाह इतनी प्रबल थी कि उन्होंने 12 गुरु बनाए थे। वह अपने गुरुओं का बहुत ही सम्मान और आदर करते थे। घर पर गुरुओं के आगमन पर वह स्वयं ही उनकी सेवा करते और उनके द्वारा बताई गई हर बात को मानते। उनका मानना था कि गुरु ही भगवान से मिला सकते हैं। बिना गुरु के भगवान को नहीं पाया जा सकता है। वे गुरु की हर आज्ञा को हर हालत में शिरोधार्य मानते थे। चाहे कुछ भी घटित क्यों न हो जाए लेकिन वो गुरु की आज्ञा नहीं टालते थे। एक बार उनके पोते के नामकरण संस्कार कार्यक्रम में शहर के नामी-गिरामी लोग मौजूद थे। तभी अचानक गुरु का तार आया कि तुरंत आओ। इस पर दादा ने अपनी पत्नी को कहा तुरंत कपड़े निकालो और ड्राइवर को बुलाओ क्योंकि मुझे जाना है। इस पर पत्नी ने कहा ऐसे मौके पर आप कैसे जा सकते हैं। तब दादा ने कहा गुरु का बुलावा गोया काल का बुलावा है। काल आए तो क्या हम उसे ऐसा कहकर रोक सकते हैं कि आज हमारे पोते का नामकरण है। गुरु के प्रति ऐसी निष्ठा, भक्ति और सम्मान देखकर वहां उपस्थित लोग आश्चर्यचकित रह गए।

साक्षात्कार ने बदली जीवन की दिशा

वर्ष 1937 की बात है उन दिनों दादा के गुरु भी आए हुए थे। दादा ने उनके आगमन पर एक बहुत बड़ी सभा का आयोजन किया। उसमें शहर के प्रतिष्ठित लोग आए थे। गुरु का प्रवचन चल रहा था तभी अचानक दादा वहां से उठकर अपने कमरे में चले गए। जब पत्नी ने कमरे में जाकर देखा तो दादा ध्यान मुद्रा में बैठे थे और उनकी आंखों में ऐसी लाली थी जैसे कोई लालबत्ती जल रही हो। उनका चेहरा लाल था और कमरा दिव्य प्रकाश से प्रकाशमय हो गया था। तभी एक आवाज आई जैसे दादा के मुख से कोई बोल रहा हो। वह आवाज धीरे-धीरे तेज होती गई। वह आवाज थी-

निजानन्द स्वरूपं, शिवोहम् शिवोहम्
ज्ञान स्वरूपं शिवोहम् शिवोहम्
प्रकाश स्वरूपं, शिवोहम्, शिवोहम्।

फिर दादा के नयन बंद हो गए। जब उनके नयन खुले तो वे ऊपर-नीचे कमरे में चारों ओर आश्चर्य से देखने लगे। उन्होंने जो कुछ देखा था वे उसकी स्मृति में लवलीन थे। पूछने पर उन्होंने बताया कि एक लाइट थी और नई दुनिया थी। बहुत ही दूर, ऊपर सितारों की तरह कोई था और जब वह स्टार नीचे आते थे तो कोई राजकुमार बन जाता था तो कोई राजकुमारी बन जाती थी। उस लाइट ने कहा ऐसी दुनिया तुम्हें बनानी है, लेकिन बताया नहीं कि कैसे बनानी है।

परमपिता परमात्मा शिव की प्रवेशता

अब दादा बहुत गहन विचार में लीन रहने लगे। वह कौन सी शक्ति है जो मुझे दिव्य साक्षात्कार कराती है और इनके पीछे रहस्य क्या है। आगे चलकर दादा को यह रहस्य स्पष्ट हुआ कि परमपिता परमात्मा शिव ने हीउनके तन में प्रवेश कर अपना परिचय दिया था। परमात्मा ने दादा को कलियुगी सृष्टि के महाविनाश तथा आने वाली सतयुगी सृष्टि का भी साक्षात्कार कराया और उस पावन सृष्टि की स्थापना के लिए उन्हें निमित्त अथवा माध्यम बनने का निर्देश दिया। साथ ही परमात्मा ने उन्हें विष्णु चतुर्भुज, मृत्यु दशा, गृहयुद्धों और प्राकृतिक आपदाओं का साक्षात्कार कराया और दिव्य चक्षु का वरदान दिया।

घर से की सत्संग की शुरुआत...

साक्षात्कार के बाद दादा ने सबसे पहले घर से ही सत्संग की शुरुआत की। घर के सभी सदस्य आंगन में बैठते और दादा आत्मा का ज्ञान देते। थोड़े ही दिनों में दादा के दूर के संबंधी भी आने लगे। अब दादा को गीता में और अधिक श्रद्धा हो गई थी। इसलिए वे गीता-ज्ञान सुनाया करते। गीता का ज्ञान सुनाते-सुनाते लोगों को साक्षात्कार होने लगे। किसी को श्रीकृष्ण का, किसी को कलियुगी सृष्टि के महाविनाश तो किसी को सतयुगी दैवी दुनिया का दिव्य साक्षात्कार होने लगा। इस बात की चर्चा सारे शहर में फैल गई कि दादा के पास जाकर सत्संग करने से साक्षात्कार होते हैं। इसके बाद बड़ी संख्या में लोग आने लगे। लोग मानते थे कि दादा ही साक्षात्कार कराते हैं। दादा को बाद में यह ज्ञान हुआ था कि उन्हें और उन द्वारा दूसरों को साक्षात्कार कराने वाला स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। इस दौरान परमात्मा ने साक्षात्कार के माध्यम से दादा लेखराज को नई दुनिया की स्थापना के निमित्त बनने पर 'प्रजापिता ब्रह्मा' नाम दिया, जिन्हें हम सभी 'ब्रह्मा बाबा' नाम से पुकारते हैं।

...और व्यापार से उठ गया मन

भविष्य में होने वाले महाविनाश को देखकर दादा का मन अब अपने व्यवसाय से उठ गया। अतः उसे समेटने के लिए वे कोलकाता गए। उन्होंने अपने भागीदार से कहा- अब हमें छुट्टी दो। मैं किसी मतभेद के कारण नहीं जा रहा हूं बल्कि इसलिए जाना चाहता हूं कि अब यह धन्धा झूठा लगने लगा है। मुझे ईश्वरीय प्रेरणा आई है कि निकट भविष्य में कलियुगी सृष्टि का महाविनाश होना है। अतः अब यह धन ईश्वरीय सेवा में लगाना है। मैं अभी बैठकर आपसे कोई हिसाब-किताब नहीं करूंगा। आप बाद में अपने वकील द्वारा, जैसे भी ठीक समझो, हिसाब करा देना। वकील द्वारा हिसाब का फैसला करने से संबंधित जो कागज मिले, उन्हीं कागजों और उसी हिसाब-किताब को दादा ने ठीक मान लिया। बाद में भागीदार ने व्यापार का जो पैसा दिया तो बाबा ने अक्टूबर 1937 को आठ माताओं एवं बहनों की एक कार्यकारिणी समिति बनाकर अपना समस्त धन और सम्पत्ति समिति के नाम कर दिया। सत्संग में पूरी मर्यादाओं का पालन करने वाली ऊं राधे को इसका अवैतनिक संचालिक नियुक्त किया गया। इसके बाद अब माताएं ही सारा कार्य संभालने लगीं।

विश्व शांति के मार्ग में बाधाएं

सत्संग में चूंकि ऊं की ध्वनि लगाई जाती थी इस कारण इसका नाम ऊं मंडली पड़ गया। धीरे-धीरे ओम मंडली में सत्संग करने वालों की संख्या बढ़ती गई। इसमें आने वाली माताओं और कन्याओं को ब्रह्मचर्य के नियम का दृढ़ता से पालन करता देखकर लोगों में हलचल शुरू हो गई। लोगों ने ओम-मंडली पर मुकदमा दायर कर दिया। लोग कहने लगे कि हमने ऐसा सत्संग कभी नहीं देखा। यदि माताएं ब्रह्मचर्य का पालन करने लगेंगी तो इस सृष्टि की वृद्धि कैसे होगी? लोगों ने ओम मंडली का विरोध करने के लिए एक संगठन बनाया और अनेक तरह से ओम मंडली में आने वाली माताओं, बहनों, कुमारियों और भाइयों को डराना-धमकाना और मारपीट करना शुरू कर दिया। उन्हें तरह-तरह से परेशान किया गया और अत्याचार किए गए। जादू-टोने, टोटके करवाए गए। इतना सब होने पर भी ब्रह्मा बाबा सदा निश्चिंत, अडोल और साक्षी अवस्था में रहते थे। वे कहा करते थे कि हम तो परमपिता परमात्मा के सेवक हैं, वही सबठीक कर देगा। ओम मंडली अनेक प्रकार के विरोधों, विघ्नों और समस्याओं का सामना करते हुए निरंतर आगे बढ़ती रही।

छोटे बच्चों के लिए खोला बोर्डिंग

बाबा का विचार था कि यदि छोटे बच्चों को बचपन से ही आध्यात्मिक शिक्षा दी जाए और सच्चे गुरुकुल की तरह वातावरण हो तो उनका बहुत ही कल्याण हो सकता है। बाबा ने बालकों और बालिकाओं की शिक्षा के लिए भी एक बोर्डिंग खोल दिया। इसके बाद ओम मंडली कराची स्थानांतरित हो गई। वहां बाबा ने पांच अच्छे बंगले लिए। इनमें लगभग 300 भाई-बहनें और बच्चे कई वर्षों तक शांतिपूर्वक रहकर ईश्वरीय ज्ञान लेते रहे। इस दौरान पूरे 14 साल तक बाबा ने 300 भाई-बहनों को आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा योग-तपस्या कराई।

1950 में माउंट आबू से हुई शुरुआत...

अगस्त 1947 में देश के बंटवारे के बाद ओम मंडली तीन वर्ष तक कराची में ही चलती रही। परमात्मा के आदेशानुसार वर्ष 1950 में कराची से भारत स्थानांतरण हुआ। जब सिंध के मुसलमानों को यह पता चला कि सभी भाई-बहनें पाकिस्तान छोडक़र जा रहे हैं तो उन्होंने रुकने के लिए आग्रह और अनुरोध किया। बाद में हजारों लोगों ने सभी को माला पहनाकर विदाई दी।

स्टीमर से करीब 400 भाई-बहनें भारत के ओखा बंदरगाह पहुंचे। वहां से वे रेलगाड़ी द्वारा आबू आए। ओम-मंडली का कार्य अब यही से शुरू हुआ। परमात्मा के आदेशानुसार माउंट आबू में ब्रह्मा बाबा ने ओम् मंडली से संस्था का नाम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय रखा।

ज्योतिष विद्वानों ने दिखाए अध्यात्म के चमत्कार !

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय के मान सरोवर परिसर में 5 दिवसीय अकल्ट परिवार मिलन राजयोग शिविर आयोजित किया गया। इसमें सम्पूर्ण भारत से 300 से अधिक ज्योतिष विद्वान, हस्तरेखा, अंगूठा, जन्मपत्री, मस्तिष्क रेखा, नम्बर ज्योतिष गणित, कॉस्मिक हीलिंग, फलित ज्योतिष आदि विधाओं के विशेषज्ञों ने भाग लिया। शिविर में उत्तराखंड सरकार के राज्य मंत्री श्यामवीर सैनी, महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई, राजयोगिनी डॉ. सविता दीदी, बीके बिंदु दीदी, संस्कृत शिक्षा निदेशक रहे संस्कृत भारती के अध्यक्ष डॉ. आनन्द भारद्वाज, ज्योतिष गुरु गोपाल राजू सहित अन्य विद्वानों ने संबोधित किया।

संयम पथ पर चलते हुए तीन बेटियों का समर्पण

शिव आमंत्रण, बिलावर, जम्मू एवं कश्मीर। बिलावर, जिला कठुआ में आयोजित समर्पण समारोह में बीके मनीत कौर बहन, बीके चंपा बहन और बीके सोनिया बहन ने अध्यात्म के मार्ग पर चलते हुए ईश्वरीय सेवा में अपना जीवन समर्पित किया। कार्यक्रम में आसपास के सेवाकेंद्रों से बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। तीनों बहनों ने परमात्मा शिव को जीवनसाथी के रूप में स्वीकारते हुए शिवलिंग पर वरमाला पहनाई। इस दिव्य आयोजन के हजारों लोग साक्षी बने।

ब्रह्माकुमारियों का त्याग, तपस्या, सेवा का यह जीवन बहुत ऊंचा है : विधायक

शिव आमंत्रण, करनाल,हरियाणा।

ब्रह्माकुमारीज़ के सेक्टर-7 सेवाकेंद्र द्वारा समर्पण समारोह के उपलक्ष्य में अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इसमें परमात्म सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाली बीके शिविका बहन और बीके आरती बहन को सम्मान किया गया। दोनों बहनों ने परमात्मा शिव को जीवनसाथी स्वीकारते हुए वरमाला पहनाई। विधायक जगमोहन आनंद ने कहा कि इन बहनों ने अपने जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण फैसला लिया है। यह बहुत बड़ी बात है। यह त्याग, तपस्या, सेवा का जीवन बहुत ऊंचा है। कैथल से पधारीं पुष्पा दीदी ने कहा कि परमात्मा वर और उसका घर भी इतना सुंदर इन कन्याओं को मिला है। एक बल एक भरोसा, कभी किसी की बात दिल पर नहीं रखना, सबसे गुण सीखना, अहंकार कभी नहीं करना। बीके प्रेम दीदी ने कहा कि दोनों कन्याएं गुणवान हैं। दिल से परमात्मा पर न्यौछावर हुई हैं। सेवा की इन्हें बहुत लग्न है। बीके संगीता बहन, बीके रेणु बहन ने भी संबोधित किया।

परमात्मा शिव को बनाया जीवनसाथी

चौगान सुंदर नगर में दिव्य अलौकिक समर्पण समारोह धूमधाम से आयोजित

शिव आमंत्रण, सुंदर नगर, हिमाचल प्रदेश

ब्रह्माकुमारीज़ शाखा चौगान सुंदर नगर में ब्रह्माकुमारी नवीना बहन का दिव्य अलौकिक समर्पण समारोह धूमधाम से मनाया गया। इसमें ब्रह्माकुमारी नवीना बहन ने माता-पिता और संबंधियों की उपस्थिति में परमात्मा शिव को जीवनसाथी के रूप में स्वीकार किया। यह एक अलौकिक रस्म होती है जिससे शिव साजन की सजनी के रूप में कन्या का विवाह किया जाता है। बीके नवीना बहन ने शिवलिंग पर वरमाला पहनाकर शिव को जीवनसाथी बनाया।

इस मौके पर मुख्यालय माउंट आबू से बीके कविता दीदी, बीके खगेंद्र भाई, पंजाब जोन से बीके लीला दीदी, ओआरसी दिल्ली से बीके रूपलाल, बीके विजय भाई, जोगीदंर नगर सेंटर से बीके सावित्री दीदी, सरकाघाट सेवाकेंद्र से बीके निर्मला दीदी, कुल्लू से बीके निमो दीदी, मंडी सर्कल संयोजक बीके नरेंद्र भाई, मंडी सर्कल प्रभारी शीला दीदी, सुंदर नगर इंचार्ज बीके शिखा दीदी, हिमाचल प्रदेश पावर कोर्पोरेशन लिमिटेड के जरनरल मैनेजर संजीव बोला, शिमला के सुपरीटेंडेंट इंजीनियर राजीव वर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस मौके पर विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई, जिसमें स्वागत नृत्य, कव्वाली, पंजाबी गिद्दा, नाटक विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। इस दिव्य अलौकिक समर्पण कार्यक्रम में लगभग एक हजार लोगों ने हिस्सा लिया।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, जबलपुर, मप्र | भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेंट्स संस्थान की जबलपुर शाखा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ शिव उपहार भवन में स्वास्थ्य एवं ध्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें डॉ. प्रीति जैन ने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के आपसी संबंध पर प्रकाश डाला। बीके विमला दीदी ने सभी को सुबह और शाम पांच-पांच मिनट राजयोग ध्यान करने एवं ईश्वर को धन्यवाद देने की प्रेरणा दी। बीके विनिता दीदी ने राजयोग ध्यान के बारे में बताया।

शिव आमंत्रण, बुरहानपुर, मप्र | श्री रामेश्वर शक्कर फैक्ट्री की 22वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित प्रोग्राम में सबजोन प्रभारी बीके मंगला दीदी ने मशीन में गन्ना डालकर वर्ष की शुरुवात की। इस दौरान पूर्व सांसद, रेलवे , कोयला एवं खनिज मंत्री रावसाहेब पाटिल दानवे, विधायक संतोष रावसाहेब पाटिल दानवे को ईश्वरीय सौगात देकर सम्मानित किया।

शिव आमंत्रण, जबलपुर, मप्र | शिव उपहार भवन सेवाकेंद्र पर नगर के गुजराती समाज के भाई-बहनों के लिए विश्व एकता और विश्वास के लिए राजयोग विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। शुभारम्भ करते बीके कैलाश दीदी , गुजराती मंडल जबलपुर के अध्यक्ष डॉ. राजेश धीरावाणी , नीलिमा सेठ, अध्यक्ष-महिला श्री गुजराती मंडल, बीके विमला दीदी एवं अन्य।

शिव आमंत्रण, लोधी रोड, दिल्ली | लोधी रोड सेवाकेंद्र द्वारा सरकार के अनुभाग अधिकारियों के लिए संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें बीके गिरिजा दीदी व बीके दीपिका दीदी ने प्रतिभागियों को राजयोग मेडिटेशन का प्रैक्टिकल लाइफ में उपयोग कैसे करें आदि बातों पर प्रकाश डाला।

शिव आमंत्रण, आलीराजपुर, मप्र| जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में गीता द्वारा जीवन जीने की राह विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें इंदौर से पधारे जीवन जीने की कला के विशेषज्ञ ब्रह्माकुमार नारायण भाई ने कहा कि प्रत्येक शिक्षक व विद्यार्थी प्रतिभाशाली है और अदभुत प्रतिभा का भंडार है। उसी प्रकार उस के पास सुरक्षित रखा हुआ है, जिस तरह पृथ्वी बहुमूल्य रत्नों को अपने हृदय में सुरक्षित रखे हुए है। सेवाकेंद्र संचालिका बीके माधुरी बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

रियल लाइफ

पिताश्री को देहली में पधारने के लिए मिला निमंत्रण

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

ब्रह्माकुमारी धैर्यपुष्पा जी ने लिखा है- सभी ने सम्मिलित रूप से एक अत्यन्त स्नेह-युक्त पत्र भी पिता-श्री जी को लिखा जिसमें अनुनय-विनय करते हुए उनसे कहा -'प्यारे बाबा, 5000 वर्षों के बाद ही तो हम आत्माओं को परमपिता की पहचान मिली है और यह अलौकिक परिचय मिला है। यह संगम-युग छोटा-सा ही तो है जबकि ज्ञान-कुम्भ प्राप्त हुआ है। अब भी यदि आप हमारे बीच न पधारेंगे तो फिर यह सुहावना समय कब आयेगा? बाबा, हम चिरकाल से आपकी राह देख रहे हैं। बाबा, आपके आने से हमें ज्ञान की ऐसी बहुत-सी युक्तियाँ मिलेंगी जिससे कि घर-गृहस्थ में रहते हुए भी कमल पुष्प के समान पवित्र रहने में हमें सफलता प्राप्त होगी। बाबा, हम ज्ञान-वर्षा द्वारा काँटों से कलियाँ और कलियों से फूल तो बने हैं परन्तु आप ज्ञान-सूर्य अब पधारेंगे तो हम फूल से फल बनकर दूसरों की भी ज्ञान-रस से सेवा करने के योग्य बनेंगे।

कन्याओं ने बहुत-ही भोले-भाले शब्दों में, हुज्जत से लिखा, 'बाबा हम कन्याओं का कहना तो आप अवश्य मानेंगे ही क्योंकि इस पतित दुनिया में हमारे तो एक परमपिता ही हैं, तभी तो 5000 वर्ष पहले भी भगवान 'कन्हैयालाल' ही कहलाये।' माताओं ने लिखा कि 'हम ही तो कल्प पहले वाली माताएँ हैं जिनको ज्ञान-मुरली से चराने वाले आप निराकार परमात्मा गोपाल हैं। अतः हमारा विनम्र निवेदन तो आप नहीं टाल सकेंगे। आइये, बाबा, आइये, अब ज्यादा इन्तजार न कराइये।' भाइयों ने लिखा -' हम ही तो 5000 वर्ष पहले वाले 'गोप' हैं जिनका तो प्रभु से विशेष स्नेह का गायन सर्व शास्त्रों में है। बाबा, हम जानते हैं कि देहली एक माया-नगरी है परन्तु आप आयेंगे तो आपके साथ ही पतित-पावन शिव बाबा तो आयेंगे ही क्योंकि आप ही तो उनके रथ (साकार माध्यम) हैं: तभी तो यहाँ के भक्त-जन को पवित्रता के लिए मार्ग-प्रदर्शना मिलेगी। आपके आने से हम वत्सों को एक नया उत्साह मिलेगा, नई उमंगें हमारे जीवन में आयेंगी जिससे कि हम जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देकर उनकी ज्ञान-सेवा करने में तत्पर हो जायेंगे। आपके यहाँ पधारने से, जन्म-जन्मान्तर से अज्ञानता एवं माया से मूर्च्छित हुए अनेकानेक आत्माओं को ज्ञान रूप संजीवनी बूटी मिल जाएगी.... बाबा, आइये, अब देर न लगाइये। कल्प से बिछड़े हुए आपके हम बच्चे, आप की राह में आँखें बिछाए बैठे हैं....

इस प्रकार, सभी ने हस्ताक्षर करके एक अति शोभनीय, स्नेह-युक्त, भावना-पूर्ण पत्र बाबा को भेजा। आख़िर प्रेम के सागर शिव बाबा तथा ब्रह्मा बाबा ने उसे स्वीकार किया और उनके आने की शुभ सूचना पाकर सभी का हृदय-कमल खिल उठा। सभी के मन में ऐसा आह्लाद था कि जैसे वे इस कलियुगी दुनिया में न रहते हों बल्कि इससे बहुत ऊपर किसी ऐसे लोक में बसते हों जहाँ न विकार है, न दुःख, न बुराई है, न अशान्ति। खुशी का पारावार न था। बस, हमारे प्राण-प्यारे बाबा आने वाले हैं, इस याद में सभी का मन स्थित हो गया था। भले ही वे तन से यहाँ थे, उनका मन तो बाबा के पास था।

बाबा ने आने से पहले ही मधुबन, माउण्ट आबू से लिख भेजा 'मीठे-मीठे, सिकीलधे बच्चे, शिव बाबा तो इस समय पतित विश्व को पावन बनाने की सर्विस पर उपस्थित हैं। बच्चों के स्नेह-वश ही तो उन्हें परमधाम छोड कर इस माया नगरी में आना पडा है। बाबा तो आये ही हैं ज्ञान-रत्नों से आप बच्चों की झोली भरने। बच्चों की बार-बार पुकार सुन, आख़िर तो दिल्ली को ठक्कर से ठाकुर अथवा पत्थरपुरी से पारसपुरी बनाने के लिए आना ही होगा। अतः शिव बाबा का इस रथ को फ़रमान मिला है कि चलो तैयार हो जाओ, दिल्ली जाना है क्योंकि बच्चे बहुत याद कर रहे हैं। बाप (शिव बाबा) को ले आने के लिए दादा (ब्रह्मा बाबा) को तो आना ही होगा। बच्चे, देखा आप कितने सिकीलधे (बहुत समय के बाद चाव से मिलने वाले) और प्यारे हैं। जिसे दुनिया 'अपरम्पार' एवं 'त्रिलोकी नाथ' मानती है, वह आप बच्चों की सेवा पर आ उपस्थित हुआ है और आप बच्चों की बात को स्वीकार कर लेता है। परन्तु देखो, यह याद रखना कि किस हस्ती (परम अधिकारी) को आप अपने पास मेहमान के तौर पर बुला रहे हो। क्रमशः

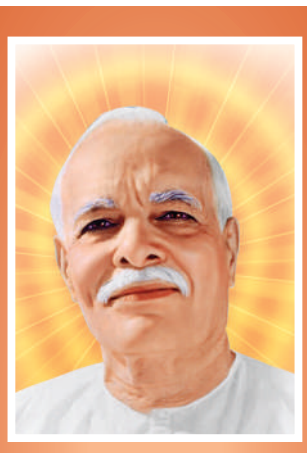

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

भाइयों ने लिखा- हम ही तो 5000 वर्ष पहले वाले 'गोप' हैं जिनका तो प्रभु से विशेष स्नेह का गायन सर्व शास्त्रों में है।

प्रेरणापुंज

बाबा पढ़ा रहा है, मैंने ताउम्र खुद को विद्यार्थी समझा

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

जिसका मुरली से प्यार है वो मास्टर मुरलीधर है। सिर्फ मेरा संबंध सच्चाई का शक्तिशाली हो। मदद तो बाबा देता है लेकिन जो मदद बचपन में देता है वो अब तो नहीं देगा। बच्चा समझ के चलाएगा क्या? जब छोटे होते हैं तो बाबा बहुत मदद करता है। फिर बड़े होने पर तेरा-मेरा, स्वभाव-संस्कार आदि सब आता है। फिर आता है हमारी याद कहां तक है? जो बाबा ने हमें टीचर के रूप में पढ़ाया, वो हमारी स्टडी कहां तक है?

> सांस रूक जाए तो ऑक्सीजन देते हैं। कभी हमसे नहीं होता है तो बाबा सकाश देता है। कुछ बच्चे योग्य नहीं हैं फिर भी बाबा करा लेता है।

राजयोगिनी दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

आज दिन तक हमारी स्टूडेंट लाइफ है। दुनिया में ऐसी कोई जगह नहीं जहां हम लोगों जैसी दिनचर्या हो। जितना हमारे संकल्प शुद्ध, शांत, श्रेष्ठ हैं तो दृढ़ आटोमेटिक होते हैं। शुद्ध और शांत वाला संकल्प जरूर राइट आएगा, जिसमें हमारी कोई सेवा समाई होगी। सेवा दूसरों की है, लेकिन मैं संकल्प चलाऊं, यह आवश्यक नहीं है। उससे शुद्ध शांत रहूं जिसको बाबा ने कहा- मनोबल। जितना मनोबल है उतना अच्छा और खुद के लिए जरूरी है। वो शक्ति जितना जमा करो उतना दिनभर में काम आती है। रूहानी राहत में रहने देती है। लेकिन अगर मैं कहीं भी एनर्जी वेस्ट करती हूं तो किसी को भी अनुभव नहीं करा सकती हूं। बुद्धि की लाइन क्लीयर नहीं होगी तो दूसरी आत्मा को ऐसा अनुभव कैसे होगा। तो एक है बाबा के बच्चे हैं। छोटे हैं तो बाबा मदद करता है। दूसरा है जितना याद में रहते हैं उतना मदद करता है। जितना पढ़ाई में अच्छे रहेंगे, उतनी मदद है। कभी कोई भी स्टेज पर जाएंगे बाबा हमारी लाज रखेगा।

आजकल कई बातों में बाबा की सकाश मिल रही है। जैसे खुद का सांस रूक जाए तो ऑक्सीजन देते हैं। कभी हमारे से नहीं होता है तो बाबा सकाश देता है। कुछ बच्चे योग्य नहीं हैं फिर भी बाबा की सकाश कार्य करा लेती है। वो भी मिलती है अंदर की सच्चाई से। किसको सच्चा बनने में टाइम लगा है। सदा सच्चा होकर रहना आसान बात नहीं है। देह-अभिमान सच्चा बनने नहीं देता है। लेकिन कोई-कोई बच्चे अति सच्चे होते हैं जो जरा भी मिक्स नहीं कर सकते हैं। ऐसी बिरली आत्माओं को बाबा की अंदर गुप्त सकाश बहुत मिलती है। जितना पुरुषार्थ है उतनी मदद है। बाबा अपनी सेवा कराने अर्थ मदद करता है। मददगार जो बनते हैं उनको मदद मिलती है।

बाबा ने हम बच्चों को निमित्त बनाकर हाथ में ग्लोब दे दिया है। अब फिर कहते हैं बेहद में ये सेवाएं फैलाओ। ग्लोब के ऊपर बैठो, साक्षी होकर देखो- क्या हो रहा है। वो तभी होगा जब छोटी-छोटी बातों से अपने को छुड़ाएंगे। छोटी-छोटी बातें ठीक हो जाएंगी- ये गैरंटी है, विश्वास है। विश्वास तभी बैठता है जब मेरी अपनी भावना प्योर हो, निश्चय हो। विश्वास बड़ी चीज है खुद में और भगवान में विश्वास हो। विश्वास होता है बुद्धि से और भावना होती है दिल से।

अव्यक्त इशारे

याद और सेवा में अलर्ट रहेंगे तो अलबेलेपन से दूर रहेंगे

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

जो परमात्मा बाबा सभी को याद प्यार देता है। ऐसा बाबा तो सतयुग में भी नहीं मिलेगा। रोज भगवान हमको याद करे- कम बात है क्या और ऐसा मीठा याद प्यार तो कोई भी नहीं देता जो इतना टाइटल दे करके याद-प्यार दे। मिलेगा, कोई ढूँढकर आओ सारे कल्प में चक्र लगाओ, मिलेगा। नहीं न मिला, न मिलेगा लेकिन हम नशे से कहेंगे कि हमको तो मिला है, मिलेगा नहीं। यह नशा चढ़े उतरे नहीं क्योंकि अभ टाइम बहुत कम है। कभी भी कुछ भी हो सकता है।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी), पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

वर्तमान समय देखने में आता है कि अलबेलापन बहुत रूपों में आता है। सभी में समझ तो बहुत अच्छी आ गई है। एक-एक प्वाइंट पर बहुत अच्छा भाषण कर सकते हैं। प्वाइंटस है, समझ है लेकिन चाहते भी नहीं होता है। उसका कारण - अलबेलापन है। मुझे करना ही है वह नहीं है, करना है लेकिन देखेंगे, सोचेंगे, समय आयेगा, कर लेंगे। अभी ऐसा अलबेलापन नहीं चाहिए। अलबेलापन भी कई प्रकार का है, औरों को देख करके भी अलबेलापन आता है। अभी तो सब चल रहे हैं। अभी कौन सम्पूर्ण बना है, बड़े-बड़े ही नहीं बना है, हम तो हैं ही पीछे। अभी बड़े तो पास हो जायेंगे, रह कौन जायेगा अलबेलापन वाले। बड़ों की भी कोई किस समय गलती हो सकती है, अभी बाबा के पास का सर्टिफिकेट किसको भी नहीं दिया है। एक बार मम्मा ने कहा देखो तुम सोचती हो - यह बड़ा महारथी भी ऐसा करता है, मैंने किया तो क्या हुआ। एक तो जिस समय वह गलती करता है उस समय वह महारथी है ही नहीं, पुरुषार्थी है। कभी महारथी है, कभी गलती करता है तो नीचे भी आता है और दूसरा मानों हमने उसकी कमी देखी, वह भी तो अपनी कमी को छोड़ रहा है ना, तो वह अपनी कमी को निकाल रहा है और हम उसकी निकाली हुई चीज अपने में धारण कर रहे हैं।

> किसकी गलती देख करके अपने में धारण करना या व्यर्थ संकल्प चलाना, इसमें टाइम भी वेस्ट किया और खुद भी नीचे गिरे।

मम्मा ने कहा कि किसकी गलती देख करके अपने में धारण करना या व्यर्थ संकल्प चलाना, इसमें टाइम भी वेस्ट किया और खुद भी नीचे गिरे। इसके लिए तुम ऐसी सीन सामने लाओ जैसे बहुत गन्दा एक गटर बह रहा है और कोई गटर का पानी बहुत मौज से पी रहें हैं। यानी दूसरे की छोड़ने वाली खराब जो वह खुद ही छोड़ रहा है और आ ले रहे हो। मम्मा मिसाल देती थी तो जब भी हमें किसी की कमी दिखाई देती थी तो हम कहते थे, यह तो गटर का पानी है। कई जो सोचते हैं कि यह तो चलता है, टाइम पर हो ही जायेगा। बस एक मास थोड़ा बन्धन है, एक मास के बाद मैं फ्री हो जाऊँगी। अरे एक मास के बाद तुम होगी या नहीं होगी भरोसा है। कोई तारिख लेकर आया है क्या? हमने देखा है कि बहुत करके जो कहते हैं एक मास के बाद फ्री हो जाऊँगी, एक मास के बाद उसके सामने और ही दूसरी बड़ी बात आ जाती है। यह तो भरोसा ही नहीं है कि हम मास भर रहेंगे भी या नहीं। तो अलबेलापन हमें अलर्ट होने नहीं देता है। कोई न कोई बात सामने आने से आलस्य आ जाता है। होता ही है, होना ही है, यह है आलस्य, अलबेलापन।

सरदार वल्लभभाई पटेल की 150 भी जयंती पर यूनिटी मार्च में ब्रह्माकुमारीज़ को विशेष आमंत्रण

विश्व बंधुत्व का संदेश देता ब्रह्माकुमारीज़ इसका अनूठा उदाहरण है : केंद्रीय मंत्री

शिव आमंत्रण, छतरपुर, मप्र।

लवकुश नगर में बीके सुलेखा दीदी के नेतृत्व में वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान किया गया।

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए एकता दौड़ का आयोजन केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार के नेतृत्व में किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारी बहनों को मुख्य अतिथि के रूप आमंत्रित किया गया। जिसमें संस्थान की ओर से बीके रमा दीदी, बीके रीना दीदी, बीके कमला दीदी, बीके रेखा दीदी सहित बीके सदस्यों ने भाग लिया।

सभा में केन्द्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने कहा कि जिस तरह से सरदार पटेल ने देश को एकता के सूत्र में बांधा उससे हमें सीख लेनी चाहिए। विश्व बंधुत्व का संदेश देता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इसका अनूठा उदाहरण है। तत्पश्चात शहर की चौपाटी से शुरू हुई एकता मार्च शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए जब ब्रह्माकुमारी विद्यालय के सामने पहुंची तो वहां सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके शैलजा बहन ने केन्द्रीय मंत्री एवं एकता मार्च में सम्मिलित समाज के सभी वर्गों का आत्मीय स्वागत किया।

चार दिवसीय ब्रह्माकुमारी टीचर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित

जीवन एक कर्म दर्शन, जैसा कर्म करेंगे, वैसी परिस्थितियां आएंगी

शिव आमंत्रण, भिलाई, छग।

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में 'सत्य गीता ज्ञान से आंतरिक परिवर्तन' विषय पर आयोजित चार दिवसीय ब्रह्माकुमारी टीचर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित किया गया। इसमें कर्नाटक हुबली से पधारी गीता ज्ञान विशेषज्ञा ब्रह्माकुमारी वीणा दीदी ने कहा कि सर्वशास्त्र शिरोमणि श्रीमद भगवत गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है, अगर हम गीता के ज्ञान को जीवन में धारण करेंगे, तभी इसका वास्तविक सार समझ में आएगा। गीता-ज्ञान सिर्फ सुनने या पढ़ने के लिए नहीं है, उसे अपने विचार, व्यवहार, जीवन शैली में अपनाना जरूरी है। सर्वप्रथम टीचर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम का वरिष्ठ ब्रह्माकुमारी दीदियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। वीणा दीदी ने बताया कि गीता हमें आत्म-ज्ञान, आत्म-चेतना और आत्म-शुद्धि का मार्ग दिखाती है। इससे जीवन में स्थिरता, शांति और संतुलन आता है। जीवन एक कर्म दर्शन है, जैसा कर्म करेंगे, वैसी ही परिस्थितियां आएंगी। इसलिए कर्म करते समय धर्म, सत्य और परमात्म-चेतना को ध्यान में रखना चाहिए। ट्रेनिंग प्रोग्राम में विभिन्न सेवाकेंद्रों की बहनों ने भाग लिया।

हिसार में आयोजित सीएमई कॉन्फ्रेंस में 1020 आयुर्वेद चिकित्सकों ने लिया भाग

मन की कमजोरी ही रोगों को जन्म देती है

शिव आमंत्रण, श्रीनगर गढ़वाल।

ब्रह्माकुमारीज़ के पीस पैलेस में हरियाणा प्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन एवं अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें पूरे प्रदेश से 1020 आयुर्वेद चिकित्सकों ने भाग लिया। डॉ. मोनिका बांगा ने अपने ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े अनुभव बताते हुए कहा कि वह संस्था से वर्षों से जुड़ी हैं। यहां प्राप्त होने वाले गहन आध्यात्मिक ज्ञान को उन्होंने अपने जीवन में अपनाया है, जिसके परिणामस्वरूप उनके व्यक्तित्व, विचारों और जीवन–दृष्टि में असाधारण सकारात्मक परिवर्तन आए हैं। राजयोग और आध्यात्मिक ज्ञान जीवन को संतुलित, शांतिपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण बनाने में अद्भुत भूमिका निभाता है। सेवाकेंद्र की निदेशिका बीके रमेश कुमारी दीदी ने कहा कि हमारा भारत निरोगी देश था, निरोगी काया थी, निरोगी विचार थे। जो भारत कभी स्वर्णिम भारत था, आज रोगी भारत बन गया है। शरीर की बीमारी से पहले मन की बीमारी आती है, और मन की कमजोरी ही शारीरिक रोगों को जन्म देती है। कार्यक्रम के लिए आयोजन समिति के सभी पदाधिकारियों ने बीके रमेश कुमारी दीदी और उनकी पूरी टीम का हृदय से धन्यवाद किया। इस मौके पर डॉ. राकेश शर्मा अध्यक्ष अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन, डॉ. दिनेश अग्रवाल चेयरमैन भारतीय चिकित्सा परिषद हरियाणा, डॉ. दिनेश शर्मा रजिस्ट्रार सीआईएम, अश्विनी गौतम अध्यक्ष हरियाणा प्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन सहित अन्य लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम का समन्वय बीके डॉ. राजेन्द्र भाई ने किया। अंत में सभी ने आयुर्वेद एवं अध्यात्म के समन्वित प्रयासों से समाज में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने और निरोगी भारत–स्वर्णिम भारत के निर्माण में अपना योगदान देने का संकल्प लिया।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, हिसार, हरियाणा | द इंस्पायर इंडिया के 11वें रक्तदान महोत्सव में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके रमेश कुमारी दीदी को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बीआर कम्बोज व अन्य अतिथियों ने मोमेंटो, शॉल पहनाकर सम्मानित किया।

शिव आमंत्रण, मुंबई | घाटकोपर सबजोन की पूर्व निदेशिका बीके डॉ. नलिनी दीदी की स्मृति में मुंबई महानगरपालिका के सहयोग से नवनिर्मित राजयोगिनी बीके डॉ. नलिनी दीदी चौक का उद्घाटन विधायक पराग भाई शाह, प्रदेश भाजपा प्रवक्ता भालचंद्र शिरसाट, डॉ. भास्कर शाह, बीके शकू दीदी, बीके विष्णुप्रिया दीदी व बीके निकुंज भाई ने किया।

शिव आमंत्रण, हिसार, हरियाणा | तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव शासकीय निकाय द्वारा एसडीएम कार्यालय एवं सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा के निर्देशन में किया गया। महोत्सव में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा माइंड स्पा स्टाल लगाया गया, जहां आगंतुकों को राजयोग ध्यान का अनुभवयुक्त परिचय दिया गया। वहीं वैल्यू गेम्स से आत्म-सशक्तिकरण का संदेश दिया गया। महोत्सव के शुभारंभ पर नगर में शोभायात्रा निकाली गई।

शिव आमंत्रण, गाजीपुर, दिल्ली | राहुल विहार सेंटर की सेवाओं के तीन वर्ष पूर्ण होने पर वार्षिक उत्सव मनाया गया। इसमें गाजियाबाद राहुल विहार के विधायक संजीव शर्मा, बीबीएसएस स्कूल के प्रिंसिपल संदीप शर्मा, महिला अध्यक्ष प्रीति चंद्रा राय, गाजीपुर सेंटर की इंचार्ज बीके सुधा दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, भीनमाल, राजस्थान | खेतावत सेवा सदन भीनमाल में विश्व दिव्यांग दिवस मनाया गया। इस दौरान एक दिवसीय मेला लगाया गया। कार्यक्रम में सेवाकेंद्र प्रभारी बीके गीता दीदी ने राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताया।

भुवनेश्वर में ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं के 50 वर्ष पूरे स्वर्ण जयंती महोत्सव में मुख्यमंत्री ने की शिरकत

शिव आमंत्रण, भुवनेश्वर, उड़ीसा। ब्रह्माकुमारीज़ भुवनेश्वर में 50 वर्षों की सतत आध्यात्मिक सेवाओं की पूर्णता पर स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया गया। इसमें प्रसिद्ध प्रेरक वक्ता शिवानी दीदी ने स्टेट गेस्ट के रूप में शिरकत की। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी, अनेक मंत्री व विधायकगण की विशेष उपस्थिति रही। शुभारम्भ दादी संदेशी जी को पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। मुख्यमंत्री माझी ने संपन्न ओड़िशा, स्वर्णिम ओड़िशा अभियान का लोकार्पण किया। तत्पश्चात अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर महोत्सव का उद्घाटन किया। यूनिट-9 की सब-ज़ोन प्रभारी बीके गीता दीदी ने संस्था की 50 वर्ष की सेवाओं की दिव्य यात्रा का उल्लेख किया। दादी संदेशी जी के स्मरण में 50 युगलों का विशेष सम्मान किया गया। माउंट आबू से पधारे डॉ. बनारसी भाई सहित अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों की उपस्थिति ने समारोह की गरिमा बढ़ाई। गीतकार डॉ. बीके दमिनी दीदी ने भजनों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में आठ हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया।

शिव आमंत्रण, नागपुर, महाराष्ट्र। ब्रह्माकुमारीज़ के विश्व शांति सरोवर में सामाजिक एकता, विश्वास और सद्भावना के निर्माण में महिलाओं की भूमिका विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी बीके चक्रधारी दीदी, नेशनल कोऑर्डिनेटर डॉ. सविता दीदी, जोनल कोऑर्डिनेटर बीके माला दीदी, नागपुर सेवाकेन्द्र की संचालिका बीके रजनी दीदी, उपसंचालिका बीके मनीषा दीदी, कार्पोरेटर परिणीता फुके, भक्ति वृंद की फाउंडर सविता अजय संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए। इस मौके पर बड़ी संख्या में महिलाएं मौजूद रहीं।

शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छग। ब्रह्माकुमारीज़ के ट्रांसपोर्ट विंग द्वारा शिव-अनुराग भवन में सड़क दुर्घटना पीड़ितों की स्मृति में विश्व यादगार दिवस पर सुहाना सफर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुंबई से विंग की नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके कविता दीदी ने कहा कि लोग भले कहते हैं कि जिंदगी एक सफर है सुहाना, यहां कल क्या हो, किसने जाना, लेकिन भविष्य में परमात्मा द्वारा एक नई दुनिया की स्थापना का दिव्य कर्तव्य किया जा रहा है, हम अनुभव करते हैं कि यहां कल क्या हो, यह हमने जाना है। कार्यक्रम में रेलवे पुलिस के महानिरीक्षक मुनव्वर खुर्शीद, रायपुर के एडिशनल कलेक्टर हर्ष पाठक, महायोग पीठधारा के आचार्य मनोहर भंडारी गुरुजी, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त दिनेश सिंह तोमर, बीके मंजू दीदी मुख्य रुप से मौजूद रहीं।

अंबाला : पत्रकारों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, अम्बाला, पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ सुप्रीम लाईट हाउस सेवाकेंद्र की ओर से पत्रकार साथियों के लिए विशेष सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के तौर पर पंजाब जोनल के मीडिया प्रभारी डॉ. बीके कर्मचंद भाई, डीआईपीआरओ अंबाला धर्मेंद्र ने शिरकत की। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके दिव्या दीदी ने अतिथियों का स्वागत किया। बीके मीरा दीदी ने योग की अनुभूति द्वारा सभी को गहन शांति व आनंद की अनुभूति कराई।

मीडिया स्नेह-मिलन कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, मलाड बेस्ट, मुंबई। राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ मलाड पश्चिम केंद्र द्वारा मीडिया पेशेवरों के लिए स्नेह-मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें एनडीटीवी के डिप्टी एडिटर सुनील सिंह, सद्वार्ता के एडिटर अभय मिश्रा, पत्रकार विकास संघ के अध्यक्ष आनंद मिश्रा सहित 45 मीडिया प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। बीके नीरजा बहन ने राजयोग के बारे में बताया। संचालन मीडिया कोऑर्डिनेटर बीके संजय भाई ने किया।

शिव आमंत्रण, कादमा (हरियाणा)। सेवाकेंद्र पर संगम-गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन एवं वरिष्ठ नागरिक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें बाढ़डा विधायक उमेद पातुवास ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ आध्यात्मिकता से श्रेष्ठ संस्कार का निर्माण कर रही है, जिससे विशेष हमारे युवा पीढ़ी में हमारे बुजुर्गों के प्रति मान सम्मान बढ़ेगा, तभी भारत देश पुनः विश्व गुरु बनेगा। चंडीगढ़ की बीके कविता दीदी ने संगम प्रोजेक्ट के बारे में विस्तार से बताया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके वसुधा बहन ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि झोझूकलां-बाढडा ब्लॉक के हर गांव में यह अभियान चलाया जाएगा। बीके अंकिता बहन ने वरिष्ठजनों का सम्मान करने की शपथ दिलाई।

मप्र के नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने लिया भाग

नशामुक्त विजयी योद्धाओं का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल प्रभाग द्वारा पूरे भारत में चलाए जा रहे नशा मुक्त भारत अभियान का इंदौर जोन में शुभारंभ कार्यक्रम न्यू पलासिया स्थित ज्ञानशिखर में आयोजित हुआ, जिसमें राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से स्थाई रूप से नशा मुक्त होने वाले 254 विजयी योद्धाओं का समारोह में सम्मान किया गया। मप्र के नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि जो युद्ध में जीतते हैं वह वीर कहलाते हैं पर जो स्वयं को जितते हैं वह महावीर कहलाते हैं और वह महावीर आप सब हैं, क्योंकि स्वयं को जीतना सबसे मुश्किल कार्य है। संस्थान का जन-जन को नशा मुक्त करने का कार्य देश पर बहुत बड़ा उपकार है क्योंकि एक व्यक्ति नशा मुक्त होता है तो उसका पूरा परिवार, समाज तथा हजारों लोगों के जीवन में उसका प्रभाव पड़ता है तथा उनका भी जीवन सुखी हो जाता है। ब्रह्माकुमारी बहनें वह पारसमणी हैं जिनके संग में आने से तथा उनकी तपस्या का रंग लगने

से कैसा भी पत्थर सदृश्य मनुष्य सोना बन जाता है। मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह, जोनल निदेशिका बीके हेमलता दीदी, एमजीएम मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. अरविंद घनघोरिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंदसौर के डॉ. दिनेश जोशी ने राजयोग से नशा मुक्त बनने तथा अपने जीवन में आए परिवर्तन का अनुभव सबके साथ सांझा किया।

शिव आमंत्रण, आगरा, उप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के आर्ट गैलरी म्यूज़ियम में आंतरिक शांति से विश्व शांति की ओर विषय पर एक विशेष सत्र का आयोजन किया गया। इसमें मुंबई से पधारे प्रोफेसर बीके गिरीश भाई ने आत्मशक्ति, राजयोग मेडिटेशन एवं परिवार व समाज में शांति का संस्कार रोपण करने पर प्रेरक उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि स्वयं की पहचान, अपने गुणों की पहचान और मन में चलने वाले व्यर्थ संकल्पों को विराम देना ही शांति की प्रथम कड़ी है। जब व्यक्ति स्वयं शांति का अनुभव करता है, वही शक्ति उसके परिवार, समाज और विश्व में फैलती है। राजयोग मेडिटेशन द्वारा विश्व परिवर्तन का वर्तमान समय अत्यंत महत्वपूर्ण है। ज़ोन इंचार्ज बीके शीला दीदी, बीके मधु दीदी, बीके माला दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य ▶ 150 रुपए ▶ तीन वर्ष 450 रुपए
▶ आजीवन 3500 रुपए
मो ▶ 9414172596, 8521095678
Website ▶ www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

प्रधान संपादक ▶ ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ▶ 8538970910, 9179018078
Email ▶ shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 9471854331

Scan To Pay

सिरोही के प्रभारी मंत्री केके विश्नोई ने लिया भाग

ब्रह्माकुमारीज का योगदान सराहनीय: मंत्री

अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. मृत्युंजय भाई का 78वां जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया

शिव आमंत्रण, आबू रोड।
समाज में मूल्यों का समावेश करना सबसे बड़ा पुण्य है। समाज के लोगों को सही रास्ता दिखाना है। यह संस्थान इस क्षेत्र के लोगों के अन्दर नैतिक मूल्यों का विकास करने का जो कार्य कर रही है, वह सराहनीय है। ऐसी संस्थाओं का आगे आकर मानवता की सेवा करने की बहुत आवश्यकता है। उक्त उदगार जिले के प्रभारी मंत्री केके विश्नोई ने व्यक्त किए। वे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के दादी प्रकाशमणि पार्क में आयोजित आध्यात्मिक समागम को संबोधित कर रहे थे।
ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी संतोष दीदी ने कहा कि यदि मनुष्य का जीवन दूसरों की सेवा में लगता है तो इससे बड़ा पुण्य कुछ नहीं होता है। महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि जीवन को मानवता की

सेवा में लगा देना सबसे बड़ा भाग्य है। इसलिए मनुष्य को हमेशा ही परोपकार एवं दूसरों की सेवा करने का भाव रहना चाहिए। अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि मैं खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि अपना सारा जीवन परमात्मा के दिव्य कार्य में लगाने का परम सौभाग्य मिला। शिव बाबा का संदेश जन-जन तक पहुंचे यही जीवन का उद्देश्य है। इस दौरान डॉ. बीके मृत्युंजय भाई का 78वां जन्मोत्सव संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और भोपाल व इंदौर जोन से आईं ब्रह्माकुमारी बहनों की मौजूदगी में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में आबू पिण्डवाड़ा विधायक समाराम गरासिया, बीजेपी की जिलाध्यक्ष रक्षा भंडारी, ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिडढा, बीके देव भाई, बीके शांतनु भाई, बीके कोमल भाई, बीके शिविका बहन, बीके प्रकाश भाई, बीके हरीश भाई, बीके आत्म प्रकाश भाई सहित बड़ी संख्या में ब्रह्माकुमार भाई-बहनें मौजूद रहे।

दस दिवसीय मेरी संस्कृति, मेरी पहचान अभियान चलाया

शिव आमंत्रण, श्रीनगर, उत्तराखंड।

ब्रह्माकुमारीज़ के शिपिंग एविएशन टूरिज्म विंग एवं ब्रह्माकुमारीज़ श्रीनगर गढ़वाल सेवा केंद्र द्वारा उत्तराखंड राज्य स्थापना के रजत जयंती समारोह के उपलक्ष में दस दिवसीय मेरी संस्कृति मेरी पहचान अभियान चलाया गया।
शुभारंभ पर ब्रह्माकुमारीज़ के क्षेत्रीय निदेशक एवं स्पोर्ट्स विंग के नेशनल कोऑर्डिनेटर राजयोगी मेहरचंद भाई ने कहा कि आज भी भारतीय संस्कृति अपने मूल्यों को बनाए हुए हैं। आज ब्रह्माकुमारीज़ अनेकों कार्यक्रमों और राजयोग शिविरों के द्वारा विश्व के 140 देश में गीता में वर्णित राजयोग ध्यान के द्वारा भारतीय संस्कृति का गौरव बढ़ा रही है।
सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नीलम बहन ने बताया कि यह अभियान श्रीनगर से शुरू होकर रुद्रप्रयाग, गुप्तकाशी, कर्णप्रयाग, ज्योर्तिमठ, गोपेश्वर, नई टिहरी, चंबा, चिन्यालीसौड़ आदि स्थानों से होकर चलाया गया। 19 नवंबर को उत्तरकाशी में भव्य समापन किया गया।

दिल्ली से पधारे साइंटिस्ट एवं इंजीनियरिंग विंग के जोनल कोऑर्डिनेटर मुख्य वक्ता बीके पीयूष भाई ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ तपस्वियों और वीरों की भूमि उत्तराखण्ड से विश्व को यह संदेश देना चाहती है कि सम्पूर्ण भारत पुनः देवभूमि बनने जा रहा, जिसका कार्य गुप्त रूप से बाबा केदारनाथ स्वयं पिछले 90 वर्षों से कर रहे हैं। इस दौरान गढ़वाल विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी डॉ. संजय ध्यानी, एडवोकेट विवेक जोशी, ऑनर मोपिया रिजॉर्ट श्रीनगर एवं श्री अप्पल रतूड़ी अध्यक्ष होटल एसोसिएशन, प्रोफेसर जेके तिवारी, प्रोफेसर राकेश नेगी, भोपाल चौधरी, कमला गोयल, उमा जोशी भी मौजूद रहे। अंबाला से पधारीं बीके शैली बहन जी ने संस्था और पर्यटन विभाग का परिचय दिया। गढ़वाल विश्वविद्यालय के एनएसएस के छात्र-छात्राओं द्वारा गढ़वाली, जौनसारी एवं कुमाऊनी परिधान में उत्तराखंड के परंपराओं एवं सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन किया। गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय में उत्तराखंड के रजत जयंती स्थापना वर्ष समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ के प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया गया।

90 प्रतिशत दुर्घटनाएं तेज वाहन चालन के कारण : सहायक पुलिस महानिरीक्षक शर्मा

शिव आमंत्रण, रायपुर, छग। ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात एवं परिवहन सेवा प्रभाग द्वारा सड़क दुर्घटना में पीड़ित लोगों की स्मृति में विश्व यादगार दिवस मनाया गया। इसके तहत शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में परिसंवाद का आयोजन किया गया। विषय था- सुखद और सुरक्षित यातायात का आधार।
इसमें सहायक पुलिस महानिरीक्षक (यातायात) संजय शर्मा ने कहा कि 90 प्रतिशत दुर्घटनाएं तेज वाहन चलाने के कारण होती हैं। दुर्घटना का एक कारण सड़क का गलत डिजाईन यानी एलीवेशन का ठीक नहीं होना भी होता है। यातायात विभाग ऐसी दुर्घटना सम्भावित जगहों

को चिन्हांकित कर ठीक कर रहा है। छत्तीसगढ़ में बच्चों को यातायात के नियमों की शिक्षा देने के लिए इसे पाठ्यक्रम में भी शामिल किया जा रहा है। यातायात पुलिस लोगों को जागरूक करने के लिए लगातार प्रयासरत है। सहायक पुलिस अधीक्षक डॉ. प्रशान्त शुक्ला, रायपुर संचालिका बीके सविता दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

नई उमंग, नई तरंगे, नए सपने...

उमंग-उत्साह को जीवन की आत्मिक ऊर्जा माना गया है। उमंग-उत्साह, आशा और खुशी से भरपूर मन जीवन को नए पंख लगा देता है। यह जीवन यात्रा को सुख-शांतिमय और आनंदमय बनाने के लिए सबसे अचूक महामंत्र है। उमंग के बिना जीवन नीरस है तो उत्साह के बिना निस्तेज। जब दोनों का संयोजन समान रूप से होता है तो जीवन के कठिन से कठिन मोड़ पर हम आसानी से पार पा लेते हैं। कोई शारीरिक रूप से भले कमजोर और असहाय हो लेकिन मन उमंग-उत्साह से भरपूर, आशावादी है, मन में नए सपने हैं, कुछ कर गुजरने का जज्बा है तो वह जीवन में असाधारण कार्य कर जाता है। संपूर्ण सृष्टि में ऐसे एक नहीं हजारों उदाहरण मौजूद हैं जब किसी इंसान से अपने असीम साहस, जज्बे, जुनून और लगन से महान कार्य करके दिखाए। जीवन के प्रति उमंग-उत्साह और आशावादिता होने से निराशा, हीनभावना कोसों दूर भाग जाते हैं।

गीता में उत्साह को बताया है आध्यात्मिक सूत्र-

श्रीमद् भागवत गीता में परमात्मा ने कहा है कि कर्म करते समय उत्साह, धैर्य और विश्वास बनाए रखना चाहिए। गीता का संदेश है- निराशा त्यागो, कर्तव्य में स्थित रहो और परमात्मा पर भरोसा रखो। यही उमंग-उत्साह का आध्यात्मिक सूत्र है। वहीं उपनिषद कहते हैं- उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत अर्थात उठो, जागो और श्रेष्ठ लक्ष्य प्राप्त होने तक रुको मत। यह मंत्र मनुष्य में उत्साह और जागृति भरने का आह्वान है। **रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं कि होइहै सोई जो राम रचि राखा।** अर्थात् जो कुछ भगवान राम ने रच रखा है, वही होगा, तर्क-वितर्क करके कोई भी उसे बदल नहीं सकता या उसकी शाखा-प्रशाखा (विस्तार) नहीं बढ़ा सकता है। ईश्वर की इच्छा ही सर्वोपरि है और मनुष्य को भाग्य या दैवीय विधान पर विश्वास रखना चाहिए। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचना चाहिए। इस भाव से जीवन में स्वीकार्यता आती है और मन निराशा से मुक्त होकर सहज उत्साह में स्थित हो जाता है।

हर परिस्थिति में उमंग, आशा और सकारात्मकता बनाए रखें-

स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि- उत्साह ही मनुष्य की सुप्त शक्तियों को जागृत करता है। उत्साह, साहस और आत्मविश्वास यही सफलता की कुंजी हैं। उनके अनुसार निराशा पाप के समान है, क्योंकि वह आत्मबल को नष्ट कर देती है। गुरु ग्रंथ साहिब, गुरुबाणी में लिखा है कि ईश्वर-स्मृति से मन में चढ़दी कला रहती है। चढ़दी कला का अर्थ है हर परिस्थिति में उमंग, आशा और सकारात्मकता बनाए रखना। महात्मा बुद्ध ने मध्यम मार्ग का उपदेश देते हुए कहा कि निराशा और अति-आकांक्षा दोनों ही दुख का कारण हैं। जागरूकता, सकारात्मक दृष्टि और निरंतर प्रयत्न से मन में उत्साह बना रहता है, जिससे जीवन में संतुलन आता है।

उमंग-उत्साह एक साधना है

उमंग-उत्साह केवल भाव नहीं, बल्कि साधना है। यह साधना जीवन को बोझ नहीं, उत्सव बना देती है। जब हम परमात्मा में, उसकी बनाई इस सृष्टि में संपूर्ण विश्वास रखते हुए वर्तमान में जीते हैं तो जीवन में निश्चिंतता आती है। वर्तमान में जीने से न अतीत कचोटता है और न भविष्य के दिवा स्वप्न मन के आकाश को विचलित कर पाते हैं। वर्तमान की स्वीकारोक्ति जीवन के वास्तविक आनंद के करीब ले जाती है। इसी में सच्चा सुख है।

आत्मिक स्वरूप की स्मृति से साक्षीभाव-

कर्म में आत्मिक स्वरूप की स्मृति, कर्म और परिणाम में साक्षीभाव लाती है। इससे मन हार-जीत, लाभ-हानि, सुख-दुख में एक समान रहता है। आत्मिक स्वरूप की स्मृति ही परमात्म स्मृति और याद का आधार है। परमात्मा की याद में रमा मन सदैव उमंग-उत्साह से भरपूर और आनंदित रहता है। वह इस दुनिया से बेखबर हर पल ईश्वरीय याद, पालना, प्यार और साथ की अनुभूति में इतना तल्लीन हो जाता है कि भौतिक आधार उसे नगण्य लगने लगते हैं। आध्यात्मिक अनुभूतियों का अनुभव साक्षीपन की स्थिति से ही आता है।

नए साल में नया करने का हो संकल्प-

हम सभी नए साल में जीवन को नए तरीके से जीने, बड़े लक्ष्यों को पाने, व्यवस्थित दिनचर्या, व्यायाम, योग आदि को लेकर बड़ी-बड़ी योजना बनाते हैं लेकिन नए वर्ष के चंद दिनों बाद ही वह योजना धरी की धरी रह जाती है। इसके पीछे मूल कारण है किसी लक्ष्य को पाने की चाह में उमंग-उत्साह की कमी। किसी कार्य को जितने उमंग-उत्साह, आशा, हिम्मत, जुनून और लगन के साथ किया जाता है उसकी सफलता उतनी ही निश्चित होती है। शुरुआत भले छोटी हो, लेकिन मन में उमंग-उत्साह तूफान के समान हो। सत्य ज्ञान, परमात्म मदद, नियमितता, सच्चाई-सफाई, आशावादिता, श्रेष्ठ, महान और सकारात्मक चिंतन वह दिव्य गुण हैं जो जीवन को उमंग-उत्साह से भरपूर कर देते हैं।

इस नव वर्ष 2026 में संकल्प करें- जीवन में जो पीछे छूट गया है उसे भुलाकर पूरे उमंग-उत्साह, नव ऊर्जा, नव उल्लास, नई उमंग, नई तरंग से इसे जीवन का सबसे यादगार, खुशनुमा, सफलतम, श्रेष्ठतम, महानतम और आदर्शमूर्त साल बनाएंगे।

जीवन प्रबंधन

बीके शिवानी दीदी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

अगर हम पुराने तरीके से सोचते रहें, बोलते रहें, करते रहें तो ख़ुशी, सेहत और सुंदर रिश्ते संभव नहीं हैं

एक से ही होती है नव संस्कारों की उत्पत्ति

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

आने वाले समय में दुःख और बढ़ने वाला है। लोग झूठ बोलते हैं, गलतियां करते हैं, धोखा देते हैं, कहना नहीं मानते, वो कलियुग है। उसके बीच रहते हुए मैं आत्मा सतयुग बना रही हूं। देखें अपने आपको मैं आत्मा सतयुग बना रही हूं। मैं आत्मा अपनी बैटरी को चार्ज कर रही हूं। खुद से पूछे मैं आत्मा कैसी हूं? मेरी हर सोच, मेरा बात करने का तरीका, मेरा व्यवहार कैसा है? कुछ ऐसे लोगों को अपनी आंखों के सामने लेकर आएं जो हमारे अनुसार नहीं हैं। जिनके व्यवहार के संग में आकर हम भी कलियुग वाले हो जाते हैं। वो तो कलियुग में हैं कलियुग वाला व्यवहार करेंगे ही हमारे सामने। जो उनके लिए सही वो सही है। अब देखें अपने आपको- मैं आत्मा सतयुग में हूं। मेरा युग और उनका युग ही अलग है। मेरे संस्कार और उनके संस्कार ही अलग हैं।
हमें सतयुग बनाना है। अगर हमें सतयुग बनाना है तो कलियुग के लोगों से बिल्कुल डिफरेंट होना पड़ेगा। जब आपके आस-पास के लोग फोटो खींच रहें हो तो उस क्षण हम क्या करेंगे? मोबाइल जेब में रहने देंगे। लेकिन ये भी याल करना है कि हमें सतयुग बनाना है। एक तो हमें कलियुग की फोटो की जरूरत नहीं है। दूसरी उस दृश्य को हम इस तरह देख रहें हैं कि वह दृश्य सतयुग वाला हो जाए। फिर वो लोग उस दृश्य का फोटो खींचते रहें। हम उस सतयुगी दृश्य को बनाएंगे। वो लोग उस दृश्य का फोटो खींचकर खुशी मनाएंगे। अब हमारा तो रोल चैंज हो गया। अगर हमें सतयुग बनाना है तो दो बातें हैं- एक है सतयुग में जाना और दूसरा है सतयुग हमें बनाना है। दोनों बातों में बहुत फर्क है।

सतयुगी बनकर रहना ही राजयोग-

जब हम पीसफुल, निःस्वार्थ, प्रेममयी, शुद्ध आत्मा, स्वभाव संस्कार से बिल्कुल स्टेबल होंगे तो सतयुग महसूस होगा। अगर सामने वाला कलियुग में है तो कलियुग में गुस्सा करना, झूठ बोलना, धोखा देना एलाउ है। लेकिन सतयुग में गुस्सा करना नॉट एलाउड है। सतयुग में बुरा महसूस करना, रोना, उल्टा जवाब देना नॉट एलाउड है। अब ये कलियुग और सतयुग इक्क_ रह पाएंगे? सतयुगी संस्कार लेकर सतयुग में रहना ये तो कोई भी कर सकता है। हमारे साथ सब प्यार से बात करें तब हम भी प्यार से बात करें, तो उसमें क्या ताकत चाहिए? वो तो कोई भी कर सकता है। सतयुग में सतयुगी जैसा रहना सबसे आसान है। कलियुग में कलयुगी जैसे रहना बहुत आसान है। कोई भी कर सकता है। लेकिन कलियुग में सतयुगी होकर रहना वो राजयोग मेडिटेशन है।

मान लिया कि आपके आसपास लोग गलत प्रकार का भोजन खा रहें हैं। कोई जंक खा रहा, कोई सडक़ पर बैठ कर पानी पुरी खा रहा है, कोई फ्राइड खा रहा, कोई सडक़ पर बैठ कर नॉनवेज खा रहा है। आपको पता लग गया ये सब गलत भोजन है लेकिन २५-३० साल पहले आप भी वही खाना खा रहे थे। अब एक दिन जागृति आई कि मुझे ये सब भोजन नहीं चाहिए। क्योंकि मेरा शारीरिक-मानसिक रिजल्ट ठीक नहीं रहा तो मुझे आज से हेल्थ चाहिए। तो हमने निर्णय ले लिया मुझे नहीं खाना। तो आसपास के लोग थोड़ी ही खाना बंद कर देंगे? क्योंकि उन्होंने निर्णय नहीं लिया है। निर्णय किसने लिया है? हमने लिया है। जिस दिन हमने निर्णय लिया आसपास के लोग कुछ और खा रहें हों और मुझे कुछ और खाना है ये संभव है। हां ये आसान है ऐसा संकल्प ले लेंगे तो हो जाएगा। ये बिल्कुल सहज है। ऐसे समय पर हम आसपास के लोगों से ज्यादा उमीदें नहीं करने हैं। लोग तो हमें वही खिलाने की कोशिश करेंगे जो वो खा रहे हैं। जब कई बार हम नहीं खाएंगे तो वो हमारा मजाक भी उड़ाएंगे, चिढ़ाएंगे भी खा लो-खा लो थोड़ा सा। लेकिन जिसने निर्णय ले लिया वो आत्मा क्या करेगी? अगर हमारे पास वो पावर है ये निर्णय लेने की तो मुझे कोई प्रलोभित नहीं कर सकता। भले मेरे आसपास चारों तरफ लोग अनहेल्दी खाना खा रहे हों, पी रहा हो। अगर कोई कुछ भी खा पी रहा है और हम नहीं खाएंगे ये तो कर सकते हैं ना। कोई कुछ भी बोल रहा है और हम वैसा नहीं बोलेंगे। अगर ऐसा नहीं कर सकते तो क्यों नहीं कर सकते?
सिर्फ हमें अपने आप से पूछकर ये निर्णय लेना है। अगर निर्णय लेते हुए गलती से हमने अपने मन को कह दिया इतना सारा पढऩे के बाद भी ये करना तो आसान नहीं है। तो मन क्या करेगा? फिर मन ये कहेगा आश्रम में बैठकर ये सब बातें करना बहुत आसान होता है। इतना समझने के बाद भी ये सब होने वाली नहीं हैं। फिर मन ये कहेगा ये सब बात इन बहनों को क्या पता? इन्होंने बच्चे पाले कभी? इनको मालूम है बच्चों को संभालने के लिए आज क्या-क्या करना पड़ता है? जैसे ही मन ने ऐसे वार्तालाप करना शुरू की तो हमने अपने आपको क्या छूट दे दी? छोड़ दो उनको बनाने दो सतयुग, जब सतयुग बन जाएगा तो हम उसमें चले जाएंगे।

क्वालिटी ऑफ लाइफ सुधारना होगी

महत्वपूर्ण यह है कि इस कलियुग को कैसे पार करना है? दिन प्रतिदिन हमारी क्वालिटी ऑफ लाइफ क्या होती जा रही है? बाहर साधनों के हिसाब से क्वालिटीज ऑफ लाइफ तो बहुत अच्छी होती जा रही है। लेकिन पर्सनल क्वालिटी ऑफ लाइफ बुरी और छोटी होती जा रही है। बुरी क्यों होती जा रही है? क्योंकि हम उसे होने देते हैं। सब लोग गुस्सा करते हैं तो गुस्सा तो करना पड़ता है। कलियुग के लोगों को नकल कर-कर के स्वतः हम लोग भी कलयुगी हो जाएंगे। कलियुग कैसे बनता है? कुछ लोग कलियुगी संस्कार क्रियेट करते हैं। बाकी सबलोग उनको नकल करते हैं।

एक से होती है कलियुग की शुरुआत-

मान लिया आज तलाक आम बात हो गया है, लेकिन कभी न कभी किसी एक ने ही शुरुआत की होगी। सबने इक्क_ तो नहीं शुरू किया होगा। किसी एक ने शुरू किया होगा। जिस समय पहले एक ने जब तलाक दिया होगा तो उस समय समाज ने क्या कहा होगा? ऐसा कैसे कर सकते हैं? और ये कितने साल पुरानी बात होगी? लगभग ५० साल। ५० साल पहले हमारी मान्यता क्या थी? शादी हो गई या अब वहीं रहना है? चाहे कैसी भी परिस्थितियां हों। ऐसा थोड़ी ही है कि उससे पहले चुनौतियां नहीं थीं। बहुत चुनौतियां थीं बहुत परिस्थितियां थीं। हर तरह के संस्कार थे लेकिन यहां दिमाग में मान्यता थी कि शादी हो गई अब यहां ही रहना है। माता-पिता बेटी को क्या कह के भेजते थे, अब वहीं रहना है। आज क्या बोलते हैं? मुश्किल आ रही है तो वापस आ जाओ। तंग कर रहे हैं तो वापस आ जाओ। तो ये मान्यता क्यों चेंज हुई? किसी एक ने किया, दो ने किया, पांच ने किया बाकी ने नकल किया और धीरे-धीरे समाज ने क्या कहा? ये तो आम बात है। जैसे ही समाज ने इस बात को मुहर लगा दी ये सब अब आम बात है फिर बहुतों ने किया। हमारे दादा-दादी की जो पीढिय़ां हैं उस समय बाहर भोजन नहीं करते थे। ऐसी कोई धारणा नहीं थी। कोई उस समय कहता बाहर खाना खाने जाना है तो अजीब लगता था। बाहर खाना खाने कौन जाता है? आज के बच्चे कहते हैं घर कौन खाना खाएगा? ये सारा खेल इस ५०-१०० सालों में बहुत कुछ हमने बदल दिया। एक ने किया, दो ने किया, पांच ने किया बाकी ने नकल किया। कलियुग इसी तरह नीचे गिरता गया।

अब हमें सतयुग बनाना है-

सतयुग कैसे बनेगा और कहां बनाना है? इस सृष्टि पर नहीं बनाना है। हमें सतयुग सिर्फ अपने मन, बुद्धि और अपने घर में बनाना है। जहां हम काम करते हैं वहां बनाना है। ये हमारी जिमेदारी है, कैसे बनेगा? कोई एक शुरुआत करेगा न। अचानक सब तो एक साथ शुरुआत नहीं करने लग जाएंगे। कोई एक करेगा। धीरे-धीरे वो तरीका किसी और को अच्छा लगेगा, तो दूसरा करना शुरू करेगा। धीरे-धीरे बाकी लोग नकल करेंगे और कुछ समय में हमारा घर स्वर्ग बन जाएगा। लेकिन वो एक बहुत महत्वपूर्ण है जो इसकी शुरुआत करेगा। कौन है वो ? जो पहले शुरुआत करेगा कि मैं जहां हूं वहां ही सतयुग बनाऊंगा। अगर मान लिया कि कोई मुझे नकल नहीं करता, मेरे घर, ऑफिस में कोई नहीं बदलता। लेकिन मेरा तो सतयुग बन जाएगा न। इसी कलियुग में रहते हुए हमारी अंदर की एनर्जी कैसे हो जाएगी? वो सतयुग की एनर्जी वाली हो जाएगी। लेकिन उसके लिए अपने आपको बार-बार कहना होगा कि ये करना बहुत आसान है।

समस्या- समाधान

- राजयोगी बीके सूरज भाई, माउंट आबू

रोज संकल्प करें- भगवान हर पल मेरे साथ हैं, मेरा साथी है

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। बहुतों ने बुरे कर्म कर लिए हैं। अपने इस जीवन में वह उनको याद आते रहते हैं, जिसे याद करने से दुःख मिलता है, इसलिए पास्ट को पूरी तरह से समाप्त करना है। बाबा तो ये बोला करते थे पास्ट को ऐसे समझ लो जैसे पुराने जन्म की बात है। अभी तो नया ब्राह्मण जन्म हो गया। उस पुराने जन्म में जो कुछ किया या हुआ है, किसी ने हमें तकलीफ दी या हमारे द्वारा कई गलतियां हो गई हों। लेकिन अगर वह न होता तो हम यहां न आते। हम भगवान के पास ना आते अगर वो सब बातें न होती। बहुत सी आत्माओं को उनका दुःख भगवान के पास ले आया, कईयों की उनकी परेशानी यहां ले आई, बुरी घटनाएं यहां ले आयी हैं। सच्चा सुख ईश्वरीय मिलन में हैं। खुशी अंदर से पैदा होगी, दूसरों से नहीं मिलेगी।

अंदर से जो ख़ुश रहना सीख ले वो तो ख़ुशनसीब और जो सोचे दूसरे मुझे ख़ुश रखें, अच्छा बोलें, मेरी सेवा करें, मुझे मान दें, मेरी प्रशंसा करे तो वो व्यक्ति सदा ही दुःखी रहेगा। एक तो पास्ट को पूरी तरह से खत्म करना है। कइयों को होती है भविष्य की चिंता। कई तो सोच-सोचकर दुःखी हैं, है कुछ नहीं। सोच रहे हैं और दुःखी हो रहे हैं इसलिए भविष्य का सदा ही बहुत सुंदर संकल्प रखना। रोज सुबह उठते ही संकल्प करना मैं बहुत भाग्यवान हूं, बहुत सुखी हूं क्योंकि भगवान मेरे साथ है। इसलिए मेरे साथ सबकुछ बहुत अच्छा होगा। बाबा ने हम सभी को एक बहुत सुंदर स्वमान दिया हुआ है। मैं मास्टर क्रियेटर हूं, मास्टर रचयिता। भविष्य को बनाने का अधिकार हमें हैं। भविष्य हमारे हाथ में है।

जैसे संकल्प करेंगे, वैसा हमारा भाग्य होगा-

जैसे सुंदर संकल्प हम करेंगे वैसा ही हमारा भविष्य होगा। भविष्य की चिंता नहीं करो। बुरा भी अच्छे में बदल जाएगा। जब सारे संसार को भोजन नहीं मिलेगा बाबा अपने बच्चों को दाल-रोटी खिलाता रहेगा और क्या चाहिए। जब संसार को आग लगेगी बाबा के बच्चे सेफ रहेंगे, लेकिन उन्हीं को बाबा पर विश्वास होगा, जिन्होंने समर्पण भाव अपनाया है, जिन्होंने उसकी आज्ञा को पालन किया है। जिसने उसके प्यार को जीत लिया वो उनकी सुरक्षा बहुत करेगा, कष्ट नहीं होने देगा। तो मेरे साथ बहुत कुछ अच्छा होगा। मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए। अब वो सब नहीं होगा जो आज से 50 साल पहले होता था, बच्चे मां-बाप के आज्ञाकारी। अब तो छोटों को आपको सम्मान देना पड़ेगा तब वो आपकी बात सुनेंगे। अपनी कामनाओं को कम करना ही है।

हर आत्मा का अपना पार्ट है-

बाबा ने बहुत सुंदर ज्ञान दिया है हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है। पार्ट भी अपना, भाग्य भी अपना, बुद्धि भी अपनी, संस्कार भी अपने। अपनों से ही आज कल सबको ज्यादा कष्ट हो रहा है। जहां भी कष्ट हो रहा हैं ख़ुशी जा रही है वो अधिकतर लोग अपने हैं। अपनों से कामनाएं भी बहुत होती हैं। अपनों पे अधिकार भी होता हैं, अपनों को कुछ कहा भी जाता है। बाबा ने कह दिया बच्चे तुम्हें बहुत ख़ुशी होनी चाहिए भगवान के सम्मुख बैठे हो, मैं तुम्हें स्वर्ग की राजाई देने आ गया हूं, भगवान तुम्हारे घर में मेहमान बनकर आ गया है। बहुत बड़ी ख़ुशी की बात है, मैं तुम्हारे लिए हथेली पर स्वर्ग ले कर आया हूं। ख़ुशी की बात है। ऐसी बातें हमें डायरी में नोट करनी हैं।

अच्छी बातों को लिखकर जेब में रखें-

20-25 बातें ख़ुशी की, 20-25 बातें ईश्वरीय नशे की होनी ही चाहिए। इसे पढ़ते रहेंगे बातें हल्की होती रहेंगी। हमेशा लिख कर रख लो भगवान हमारे साथ है, पढ़ लिया करो रोज। साथ होने के दो मतलब होते हैं। पहला स्थूल रूप से साथ रहते हो दूसरा है आपका किसी बड़े आदमी से कनेक्शन हो आपके शहर में, यह आपका कोई रिलेटिव बड़ा आदमी हो आपको नशा रहता है न फलाना आदमी मेरे साथ है। इधर भगवान हमारे साथ हैं तो डरने की क्या बात है। एकांत में हमारा चिंतन बहुत अच्छा चलेगा। लिखा करेंगे सभी अच्छी-अच्छी बातें। पुरुषार्थ के लिए कुछ बातें- भगवान मुझे साथ दे रहा है, कौन मुझे साथ दे रहा है ये नशा चढ़ता रहे? स्वयं भगवान मुझे साथ दे रहा है।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Dec. 2024
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » प्रधान संपादकः बीके कोमल » संपादकः बीके पुष्पेन्द्र